अवध की आवाज

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र राजधानी लखनऊ उत्तर प्रदेश से प्रकाशित

www.avadhkaawaz.com

वर्ष–10 अंक – 166 R.N.I.- UPHIN/2012/45127 लखनऊ गुरुवार 16 सितम्बर 2021 पृष्ठ – 8 मूल्य–3 रूपया

संक्षिप्त समाचार

अवध की आवाज ब्यूरो

उन्नाव। अल्पसंख्यक मोर्चा के नूर उल हक को नगर अध्यक्ष बनाए जाने पर समर्थकों द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। इस मौके पर दिनेश तिवारी, सुमित चौहान, राधा मिश्रा, सुधीर चौहान आदि लोग मौजूद रहे।

वाहनों चेकिंग बना चर्चा का विषय

अवध की आवाज

कानपुर। बुधवार को जाजमऊ चौकी चकेरी थाना क्षेत्र समय एक वजह से सभी चार पहिया वाहनों चेकिंग की। करते वहीं पर मौजूद अवध की आवाज के कानपुर व्यापार जिला संवाददाता खबर कवरेज करते समय चेकिंग के बारे में पुलिस से जानना चाहा लेकिन पुलिस कुछ भी बताने से कतराती रही। भारी वाहन चेकिंग जनपद कानपुर लाल बांग्ला चकेरी थाना अंतर्गत में चर्चा का विषय बना।

शोक संदेश

वरिष्ठ पत्रकार मसूद भाई के पिताजी का आकस्मिक निधन हो गया है ईश्वर मसूद भाई को इस दुख की घड़ी में हिम्मत और इस असीम दुख को सहन करने की शक्ति दे व उनके पिताजी की आत्मा को शांति प्रदान करे।

कांग्रेस ने संभावित उम्मीदवारों से सहयोग राशि के रूप में मांगे 11 हजार रुपये

लखनऊ (वेब वार्ता)। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने आगामी विधानसभा चुनाव के लिए संभावित उम्मीदवारों से प्रत्येक आवेदन के साथ 11,000 रुपये सहयोग राशि के रूप में मांगे हैं। कांग्रेस की उत्तर प्रदेश इकाई के अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने मंगलवार को इस संबंध में एक आदेश जारी किया। आदेश में कहा गया है, " सभी आवेदक अपना आवेदन जिला या राज्य स्तर पर अधिकृत व्यक्तियों के पास 11 हजार की 'सहयोग राशि' के साथ जमा करें। यह राशि 25 सितंबर, 2021 तक जमा करें और इसकी रसीद प्राप्त कर लें।" इसमें कहा गया है कि 2022 में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिये आवेदन पत्र जमा करने के लिए जिला मुख्यालय पर जिला या शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्षों को अधिकृत किया गया है। प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर पार्टी की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने पिछले सप्ताह दो दिन चुनाव से जुड़े मामलों पर विचार विमर्श किया था। इसके बाद उम्मीदवारों से आवेदन पत्र दाखिल करने को कहा गया है। पार्टी के एक पदाधिकारी ने कहा कि "सहयोग राशि मांगना कोई नई बात नहीं है, सभी विपक्षी दल यह लेते हैं।" कांग्रेस की राज्य इकाई के मीडिया संयोजक ललन कुमार ने कहा कि चुनाव प्रक्रिया में सुधार और उम्मीदवारों के नाम तय करने के लिए यह कदम उठाया गया है।

मुख्यमंत्री ने 4199.31 लाख के सड़कों का किया शिलान्यास

मीरजापुर (वेब वार्ता)। एनआइसी लखनऊ से वीडियो कांफ्रेंसिग के माध्यम से प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सड़कों का लोकार्पण मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को किया। पीरियाडिक रिनीवल के तहत विकास खंड सिटी के झिगुरा से बरकछा तक 96.24 लाख रुपये की लागत की सड़क का लोकार्पण हुआ। ऊर्जा राज्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में सड़कों के निर्माण से विकास कार्यों ने रफ्तार पकड़ा है। ग्रामीण अभियंत्रण विभाग पी आइ यू प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के पी एम जी एस वाई तीन के तहत शिलान्यास के लिए 12 मार्गों को प्रस्तावित किया गया है। इसमें लरवक से मिर्जामुराद 465.50 लाख रुपये, लालगंज से बरडिहा 299.31 लाख रुपये, चुनार राजगढ़ से भेड़ी 243.89 लाखरुपये, बघौड़ा एलडी रोड से धुरकर 582.87 लाख रुपये, एलडी रोड से रैकरी 198.41 लाख रुपये, चुनार राजगढ़ से सरसो पतार 237.56 लाख रुपये, एनएच सात से भरपुरा

राजवाहा रोड 272.39 लाख रुपये, मधुपुर धनसिरिया 717.50 लाख रुपये, सोनपुर घाट से अहरौरा वाया रामपुर डबई 390.85 लाख रुपये, तिसुआ हिल कनौरा घाट मार्ग 286.89 लाख रुपये, भैसा से बरैनी 273.70 लाख रुपये तथा लालगंज हलिया रोड से थरपरसिया 230.44 लाख रुपये सहित 12 सड़कों का निर्माण लगभग 4199.31 लाख रुपये की लागत से होगा। कार्यक्रम के दौरान डीएम प्रवीण कुमार लक्षकार, सीडीओ श्रीलक्ष्मी वीएस, अपर मुख्य अधिकारी नीतू सिंह सिसौदिया, डीएफओ पीएस द्विवेदी शामिल रहे।

817 करोड़ रूपये की लागत से होगा ग्रीन कारिडोर के पहले फेज के भाग-1 का निर्माण

अवध की अवाज

लखनऊ। लखनऊ विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष अक्षय त्रिपाठी के नेतृत्व में लखनऊ ग्रीन कारिडोर प्रोजेक्ट ने रफ्तार पकड़नी शुरू कर दी है। उनके द्वारा लगातार की गई समीक्षा बैठकों के फलस्वरूप टाटा कन्सलटिंग इंजीनियर्स द्वारा इस प्रोजेक्ट के पहले फेज के भाग–1 की संशोधित डी0 पी0 आर0 लखनऊ विकास प्राधिकरण को सौंप दी गई। डी0 पी0 आर0 तय होने से अब इस परियोजना का काम जल्द ही स्वरूप लेना शुरू कर देगा। लखनऊ विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष अक्षय त्रिपाठी ने बताया कि ग्रीन कारिडोर प्रोजेक्ट के अंतर्गत गोमती नदी के दोनों किनारों पर प्रथम फेज आई0 आई0 एम0 रोड से शहीद पथ तक नया बंधा एवं उसके चौड़ीकरण तथा उसके ऊपर सड़क निर्माण किया जाना है। परियोजना के कार्यों को शीघ्र प्रारम्भ करने के लिए फेज–1 के कार्यों को 03 भागों, क्रमशः आई0 आई0 एम0 रोड से हार्डिंग ब्रिज तक, हार्डिंग ब्रिज से पिपराघाट तक एवं पिपराघाट से शहीद पथ तक बांटा गया है। उपाध्यक्ष अक्षय त्रिपाठी ने आगे बताया कि टाटा कन्सलटिंग इंजीनियर्स द्वारा प्रस्तुत की गई भाग–1 की डी0 पी0 आर0 के तहत होने वाले कार्यों की कुल लागत 817 करोड़ रूपये है। इसके अंतर्गत आई0 आई0 एम0 रोड से हार्डिंग ब्रिज तक गोमती नदी के दोनों किनारों पर लगभग 7 किमी0 लम्बा बंधा निर्माणध्चौडीकरण तथा उसके

ऊपर फोर लेन सड़क का निर्माण प्रस्तावित है। इसके अलावा गऊघाट पर 270 मी0 लम्बाई का पुल, कुड़ियाघाट से हार्डिंग ब्रिज तक 1050 मीटर लम्बाई का फ्लाई ओवर तथा खदरा से हार्डिंग ब्रिज तक 660 मी0 लम्बाई का फ्लाई ओवर निर्माण प्रस्तावित किया गया है। इस कारिडोर प्रोजेक्ट में आई0 आई0 एम0 रोड व हार्डिंग ब्रिज के अतिरिक्त कैटल कालोनी (बुद्धेश्वर मार्ग), गऊघाट, प्रबन्ध नगर योजना एवं फैजलगंज पर इन्ट्री व एग्जिट का प्रस्ताव किया गया है। प्रोजक्ट इम्प्लीमेंटेशन यूनिट के सदस्य अनिल कुमार सिंह सेंगर ने बताया कि इस परियोजना में सिंचाई विभाग के कार्यों में बंधा निर्माण व चौड़ीकरण, आर0 ई0 वाल और बैरल आदि निर्माण कार्यों के लिए लगभग लागत 216 करोड़ रूपये है। वहीं, लोक निर्माण विभाग से सम्बन्धित सड़क निर्माण कार्य के लिए 171 करोड़, ब्रिज व फ्लाई ओवर के लिए 256 करोड़ धनराशि आंकलित की गई है। उक्त के अतिरिक्त बंधा निर्माण के लिए प्रस्तावित अधिग्रहण हेतु भूमि 27 हेक्टेयर अनुमानित लागत 62 करोड़ रूपये, कारिडोर के एलाइनमेंट में आने वाले पावर कारर्पोरेशन तथा नगर निगम की परिसम्पत्तियों की शिफ्टिंग के लिए 20 करोड़ रूपये का प्राविधान किया गया है। प्रोजेक्ट के इस भाग में गोमती नदी के दोनों किनारों पर 10.6 किलोमीटर लम्बाई का फोर लेन हाइवे और तीन स्थानों पर लगभग 2 किलोमीटर लम्बाई का ब्रिजध्फ्लाई ओवर निर्माण कार्य का प्राविधान किया गया है।

आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों और सहायिकाओं को यूपी सरकार का तोहफा,मानदेय में भारी बढ़ोतरी

अवध की आवाज

गोंडा। योगी सरकार ने आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों और सहायिकाओं को बड़ा तोहफा दिया है।इनके मानदेय में भारी बढ़ोतरी की गई है।आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को मानदेय के अतिरिक्त हर माह 1500 रुपये,मिनी आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को 1250 रुपये और आंगनबाड़ी सहायिकाओं को 750 रुपये प्रतिमाह प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। इससे आंगनवाड़ियों का मानदेय अब 7000,मिनी आंगनबाड़ियों का 5500 और आंगनबाड़ी सहायिकाओं का मानदेय 4000 रुपये हो जाएगा।राज्य सरकार ने इसे परफार्मेंस से जोड़ते हुए मानक तय कर दिए गए हैं।इस संबंध में मंगलवार को बाल विकास व पुष्टाहार विभाग की प्रमुख सचिव वी हेकाली झिमोमी ने आदेश जारी कर दिया है।इस आदेश से लगभग 3.70 लाख कार्यकत्रियों व सहायिकाओं को लाभ मिलेगा।यह लाभ सितम्बर के मानदेय के साथ दिया जाएगा। राज्य सरकार ने बीते दिनों अनुपूरक बजट में मानदेय बढ़ाने की घोषणा की थी।अनुपूरक पोषाहार में सभी पंजीकृत लाभार्थियों को प्रतिमाह पोषाहार के शत–प्रतिशत वितरण करने पर आंगनबाड़ी व मिनी आंगनबाड़ी कार्यत्रियों को 500–500 रुपये प्रतिमाह और सहायिकाओं को 400 रुपये प्रतिमाह प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। वहीं सभी पंजीकृत लाभार्थियों के लिए पोषण ट्रैकर पर सभी क्षेत्रों का हर माह शत–प्रतिशत फीडिंग का काम पूरा करने पर आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को एक हजार रुपये,मिनी आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को 750 रुपये और सहायिकाओं को 350 रुपये दिए जाएंगे।दोनों मानकों पर खरे उतरे पर मानदेय के साथ 1500 रुपये आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों,1250 रुपये मिनी आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों और 750 रुपये सहायिकाओं को दिए जाएंगे। आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को परफार्मेंस के आधार पर प्रोत्साहन राशि देने का फैसला 2019 में किया गया था लेकिन उस वक्त इस पर अमल नहीं किया जा सका था।विभाग की मंशा थी कि परफार्मेंस से लिंक करके प्रोत्साहन राशि देने पर सभी अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट काम करने का प्रयास करेंगी और प्रदेश से कुपोषण दूर करने में मदद मिलेगी।

भाजपा पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन का किया गया आयोजन

अवध की आवाज

गोंडा। आर पी इंटर कॉलेज मनकापुर में भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन का आयोजन किया गया सम्मेलन के मुख्य अतिथि पयागपुर विधायक सुभाष तिवारी और कैबिनेट मंत्री रमापति शास्त्री संयुक्त रुप से

पंडित श्याम प्रसाद मुखर्जी,, व पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस प्रकार बताते चलें कि कार्यक्रम की अध्यक्षता बाबू लाल शास्त्री ने किया । कार्यक्रम में प्रोफेसर, डॉक्टर एडवोकेट , साहित्यकार समेत समाज के प्रबुद्ध लोगों ने भाग लिया। रमापति शास्त्री ने संबोधन करते हुए कहा कि जब से मोदी और योगी की सरकार बनी है तब से अंतिम पायदान के हर व्यक्ति को योजनाओं का लाभ मिल रहा है । श्री शास्त्री जी ने कहा कि पूर्व सपा, बसपा की सरकारों में लूट खरसोद, हत्या, बलात्कार , डकैती चरम सीमा पर थी लेकिन अब हमारी सरकार सारे अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने का काम कर रही है। आगे कैबिनेट मंत्री जी ने कहा कि हमारी सरकार में हत्यारों, बलात्कारियों को प्रदेश से जड़ से उखाड़ फेंकने का काम किया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि पयागपुर विधायक सुभाष त्रिपाठी ने प्रबुद्ध जनों को संबोधन करते हुए कहा कि सरकार की समस्त योजनाओं का लाभ अब गांव गांव में घर , घर तक पहुंच रहा है जैसे प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, निशुल्क राशन वितरण, उज्जवला योजना , शादी अनुदान, प्रधानमंत्री आवास योजना, आज तमाम योजनाओं का लाभ लोगों को मिल रहा है, मुख्य अतिथि सुभाष त्रिपाठी ने अपने संबोधन में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए सभी प्रबुद्ध जनों का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त किया । श्री त्रिपाठी ने आगे कहा कि सपा ,, बसपा पर निशाना साधते हुए भाजपा सरकार की नीतियों से लोगों को अवगत कराया । भाजपा जिला अध्यक्ष कमल किशोर कश्यप ने अपने संबोधन में कहा कि प्रदेश सरकार की संचालित महत्वकांक्षी सरकारी योजनाओं का लाभ समाज के हर व्यक्ति को मिल रहा है ,, सम्मेलन में ब्लाक प्रमुख मनकापुर जगदेव चौधरी, चेयरमैन प्रदीप कुमार गुप्ता, भाजपा मंडल अध्यक्ष कमलेश पांडे, पूर्व ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि यूपी सिंह , जिला मंत्री वैभव सिंह, जिला उपाध्यक्ष हिंदू युवा वाहिनी आनंद सिंह , जिला पंचायत सदस्य प्रमोद चंचल ,जिला पंचायत सदस्य जनार्दन वर्मा, भाजपा पदाधिकारियों मे बाबू मिश्रा ,राहुल भारती ,मंच संचालन भाजपा पदाधिकारी स्वरूप कुमार ने किया। भाजपा जिला महामंत्री राकेश त्रिपाठी ने किया।

भूमि सरंक्षण विभाग में भारी गोलमाल,सूचना अधिकार में भी करते मनमानी

अवध की आवाज

माधौगढ़। भूमि संरक्षण विभाग में सब गोलमाल है। यह सबको पता है। उसके बावजूद इस विभाग की कोई जवाबदेही तय नहीं है। जिले के जिलाधिकारी भी भूमि संरक्षण विभाग के भ्रष्टाचार पर मौन साधे हुए हैं। माधौगढ़, रामपुरा और नदीगांव ब्लॉक के गांव में भूमि संरक्षण विभाग द्वारा कराए

गए कार्यों में जमकर भ्रष्टाचार है। इसको लेकर लगातार शिकायतें और आवाज उठाई जा रही है। लेकिन विभाग पर कोई असर नहीं हो रहा है। विभाग द्वारा खुदवाये गए तालाबों में तो इतना भ्रष्टाचार है कि अगर सही मायने में जांच हो जाए तो आधे से ज्यादा अधिकारी जांच के दायरे में आ जाएंगे और किसानों से रिकवरी तक हो सकती है। लेकिन कमीशन बाजी के खेल में सब चुप हैं। असहना निवासी राम कुमार भारद्वाज ने भूमि संरक्षण विभाग में हुए भ्रष्टाचार के लिए सूचना अधिकार के तहत तालाबों की जानकारी मांगी थी लेकिन विभाग ने 29 दिन बाद सूचना मांगने के लिए 54 की डिमांड की लेकिन समय बढ़ाने की दृष्टि से न तो यह बताया गया कि चालान किस में जमा करना है? न ही विभाग के माध्यम से यह जानकारी दी गई कि अपीलीय अधिकारी कौन है? बल्कि व्यक्तिगत तौर पर जब कार्यालय में सूचना अधिकार अधिनियम के तहत यह पूछा गया कि अपीलीय अधिकारी कौन है? तो सभी एक दूसरे का मुंह ताकते रहे और किसी ने सूचना अधिकार अधिनियम के तहत कोई जानकारी नहीं दी। बल्कि बाहर कहीं कोई सूचना पट्टिका भी नहीं थी। इस कारण यह लगता है कि भूमि संरक्षण विभाग पूरी तरह से भ्रष्टाचार में संलिप्त है और कोई कुछ ना कर पाए इसलिए जानबूझकर शिकायतकर्ता को परेशान किया जाता है।

मसाज पार्लर की आड़ में चल रहा था देह व्यापार, छह गिरफ्तार

लखनऊ,(वेब वार्ता)। राजधानी में मसाज पार्लर की आड़ में अनैतिक देह व्यापार करने वाले छह लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें पांच महिलाएं और एक पुरुष है। तलाशी के दौरान इन सभी के पास आपत्तिजनक वस्तुएं मिली है। सहायक पुलिस आयुक्त सुनील कुमार शर्मा ने बताया बुधवार को यह बताया कि गाजीपुर थाना क्षेत्र स्थित मुंशी पुलिया के पास द ज्वाय बाडी मसाज पार्लर है। पुलिस को सूचना मिली कि मसाज पार्लर की आड़ में अनैतिक देहव्यापार का धंधा किया जा रहा है। कई बार ऐसी शिकायतें मिलने के बाद पुलिस टीम को सक्रिय किया गया और मंगलवार की देर शाम को छापेमारी की गई। मसाज पार्लर से पांच महिलाएं और एक पुरुष को पकड़ा गया है। इस दौरान यहां से तीन रजिस्टर मिले और आपत्तिजनक वस्तुएं मिली। एसीपी ने बताया कि पूछताछ में पता चला कि एक युवती नेपाल की है, बांकि सब जनपद सीतापुर, अलीगंज, मड़ियांव और देवरिया की है। लड़कियों ने बताया कि पार्लर संचालक ने उनके लिए गुडम्बा में एक मकान किराए पर ले रखा था। यह युवतियां वहीं पर किराए पर रहती थीं। एक साथ उनका आना–जाना होता था। पार्लर का संचालक अभिलाष तिवारी है, उसकी तलाश की जा रही है।

अब राकेश टिकैत ने ओवैसी को कहा चाचा जान

लखनऊ (वेब वार्ता)। उत्तर प्रदेश में अब्बा जान के बाद अब चाचा जान की चर्चाएं हो रही हैं। इस बार किसान नेता राकेश टिकैत ने एआईएमआईएम अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी को चाचा जान का नाम दिया है। भारतीय किसान यूनियन (बीकेयू) के नेता राकेश टिकैत ने एआईएमआईएम नेता ओवैसी को उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव लड़ने के फैसले पर पर निशाना साधते हुए ये नया नाम चाचा जान दिया है।टिकैत ने बुधवार को दावा किया कि ओवैसी भाजपा के साथ हैं और उन्हें भगवा पार्टी का चाचा जान कहा। बागपत में पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा, भाजपा के चाचा जान, असदुद्दीन ओवैसी उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर गए हैं। अगर वह (ओवैसी) उन्हें (भाजपा) गाली देंगे, तो वे उनके खिलाफ कोई मामला दर्ज नहीं करेंगे क्योंकि वे एक टीम हैं। एआईएमआईएम द्वारा माफिया से नेता बने अतीक अहमद को टिकट देने का जिक्र करते हुए टिकैत ने कहा, प्रज्ञा ठाकुर (भोपाल से भाजपा सांसद) और उनकी साख का क्या ? तीन विवादित कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के आंदोलन का नेतृत्व कर रहे टिकैत, इन दिनों चल रहे आंदोलन के लिए समर्थन जुटाने के लिए उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों का दौरा कर रहे हैं।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में हुआ सड़कों को गड्ढा मुक्त कराने के संबंध में बैठक का आयोजन

अगले 1 माह तक समस्त सड़कें हो गड्ढा मुक्त

अवध की आवाज

उन्नाव। जिलाधिकारी श्री रविंद्र कुमार की अध्यक्षता में आज विकास भवन सकार्यालं को गड्ढा मुक्त कराए जाने के संबंध में संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिलाधिकारी ने पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारी को निर्देश दिए कि जितनी भी सड़कें जनपद में गड्ढा युक्त हैं उन्हें तत्काल गड्ढा मुक्त किया जाए। उन्होंने कहा यह कार्य अभियान के रूप में जनपद में संचालित होना चाहिए किसी भी सड़क पर किसी भी प्रकार का गड्ढा दिखाई नहीं देना चाहिए। इसके लिए पीडब्ल्यूडी विभाग की जिम्मेदारी तय की जाएगी। पीडब्ल्यूडी विभाग अलर्ट होकर सड़कों के प्रति कार्य करें। उन्होंने कहा जनपद के जितने भी विभागो से संबंधित सड़कों में गड्ढे हैं सभी की सूची उपलब्ध कराये तथा उन्नाव मंडी की जितनी सड़कें हों जो गड्ढा युक्त हों उनकी सूची उपलब्ध करा दें, सभी नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी यह सुनिश्चित कर लें जिन नगर पालिकाध्नगर पंचायतों की सड़के गड्ढा युक्त हैं उन्हें गड्ढा मुक्त जल्द से जल्द कराएं।

सम्पादकीय

तो इन्हें है अफगानी महिलाओं के 'हितों की चिंता?

अफगानिस्तान पर तालिबानी नियंत्रण के बाद भारत सहित दुनिया के कई देशों यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ में भी इस बात को लेकर चिंता जताई जा रही है कि तालिबानों के शासन काल में शरिया कानून की आड़ में महिलाओं के अधिकारों का जबरदस्त हनन हो सकता है। हालांकि ताजा खबरों के अनुसार तालिबान ने महिलाओं के लिये अलग स्कूल कॉलेज में पढ़ाई करने की बात की है। परन्तु हमारे देश में अफगानिस्तान की हालत पर खासकर वहां महिलाओं की संभावित दयनीय स्थिति पर कुछ ज्यादा ही शोर शराबा किया जा रहा है। बेशक हमारे देश में महिलाओं को लगभग हर क्षेत्र अपनी प्रतिभा निखारने की पूरी आजादी है। वैसे भी स्वतंत्र भारत में इंदिरा गाँधी जैसी विश्व की महान नेता ने लगभग 14 वर्षों तक देश के प्रधानमंत्री पद को सुशोभित कर यह साबित कर दिखाया कि भारतवर्ष पुरुषों व महिलाओं के मध्य भेदभाव यहां तक कि राजनैतिक वर्चस्व को लेकर भी लिंग भेद नहीं रखता।

कुछ ऐसा ही उदाहरण पिछले दिनों बंगाल चुनाव परिणामों ने ममता बनर्जी को भारी जीत दिलाकर भी पेश किया। सवाल यह है कि क्या यह उदाहरण यह साबित करते हैं कि भारत में महिलाओं की स्थिति,उनका मान सम्मान उनकी सुरक्षा आदि सब कुछ वैसा ही है जैसा कि इन चंद उदाहरणों में देखने को मिलता है ? तालिबानी मानसिकता को हम महिला विरोधी मानसिकता रखने वाला रूढ़ीवादी संगठन कहते हैं और अफगानी महिलाओं के प्रति अपनी चिंताओं का इजहार करते नहीं थकते। शायद उसी तरह जैसे कि मुसलमानों के अतिसूक्ष्म वर्ग में प्रचलित तिहरे तलाक को लेकर हम बहुत चिंतित थे ?

परन्तु हमारे दोहरे चरित्र वाले समाज की हकीकत तो कुछ और ही है। धर्म और राजनीति में अहम पदों व गद्दियों पर बैठे लोग आज महिलाओं के सम्मान व स्वतंत्र अधिकारों वाले देश भारत में महिलाओं को किस नजर से देखते हैं इसके सैकड़ों उदाहरण देखे सुने जा सकते हैं। अफगानिस्तान में पुरुषवादी वर्चस्व को यदि तालिबानी शरिया के नाम पर कायम रखना चाहते हैं तो हमारे देश में भी अनेक लोग अपने दुर्भावना पूर्ण वक्तव्यों से अपने मस्तिष्क में घुसे तालिबानों से भी खतरनाक विचारों को उजागर करते रहते हैं। इन दिनों गाजियाबाद का एक पुजारी उस समय से काफी चर्चा में जबसे उसके मंदिर के बाहर लगे प्याऊ पर एक छोटे लड़के की कुछ लोगों द्वारा सिर्फ इसलिये पिटाई की गयी थी क्योंकि वह हिन्दू नहीं था और मंदिर के प्याऊ में पानी पी रहा था। यह पुजारी महोदय उस समय प्यासे लड़के के पक्ष में नहीं बल्कि प्यासे की पिटाई करने वाले हट्टे कट्टे युवकों के पक्ष में खड़े थे। इसी घटना से इनकी मानसिकता तथा इनकी कथित 'हिन्दूवादिता ' का अंदाजा लगाया जा सकता है। आज इसी घटना ने इनको प्रसिद्धि क्या दिला दी कि इन्होंने जब जो चाहे,जहाँ चाहे बोलना शुरू कर दिया। गत दिनों उनका एक वीडीओ वायरल हुआ जिसमें वे कहते सुने गये कि– 'बी जे पी में जितनी भी महिलायें दिखाई दे रही हैं वो एक नेता के पास गईं और दूसरे के पास नहीं तो उनका काम नहीं होता। तीसरे से काम है तो तीसरे के पास जाना है। अब ये हैं ईमानदार और चरित्रवान लोग। ये है राजनीति। जितनी महिलायें राजनीति करती घूमती हैं। पूरा मजा आ रहा है। '

'धर्मगुरु ' के इस बयान के बाद वही महिलायें इनपर आग बबूला हो गयीं जो प्याऊ काण्ड में केवल हिन्दू होने के नाते इनके साथ खड़ी थीं। परन्तु चूंकि इस बार उसने भजपाई महिलाओं की स्मिता पर हमला किया इसलिये इसके इस आपत्तिजनक बयान का पुरजोर विरोध हुआ। महिलाओं को नीचे दिखाने व उन्हें अपमानित करने वाले इस तरह के तमाम बयान धर्मगुरुओं द्वारा दिए भी जाते हैं और अनेक धर्मगुरु महिलाओं के शारीरिक शोषण में शामिल भी पाए जाते हैं। इससे इनके अनुयाईयों पर महिलाओं को लेकर आखिर क्या छवि बनती होगी? इनके अनुयायी और ऐसे गुरुओं के अंधभक्त महिलाओं को सम्मान व अस्मिता विहीन दैहिक शोषण की वस्तु अर्थात भोग्या मात्र नहीं तो और क्या समझेंगे? आये दिन कोई धर्मगुरु,कोई नेता या कोई अधिकारी अथवा विशिष्ट व्यक्ति जब महिलाओं के शोषण अथवा बलात्कार में सम्मिलित पाया जाता है,जब नेताओं द्वारा अश्लील फिल्में सदन में बैठकर देखी जाती हों ऐसे वातावरण में देश में बलात्कारियों और वह भी दुर्दांत बलात्कारियों व हत्यारों की संख्या रोजाना बढ़ेगी या नहीं ?

सोशल मीडिया पर अभी तक वह वीडिओ मौजूद है जिसमें मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में उनकी पार्टी का एक नेता सार्वजनिक रूप से यह कहता है कि 'मुसलमानों की औरतों को कब्र से निकाल कर बलात्कार करना चाहिये '। इसके बाद योगी का भाषण हुआ और उन्होंने उस व्यक्ति के इस कद्र आपत्तिजनक भाषण पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। बाद में योगी जी इसी सांप्रदायिक वातावरण की शाख–बेल फूटने पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बन गये। और इतनी अभद्र भाषा बोलने वाले नेता का भी कुछ नहीं बिगड़ा। पिछले दिनों लोकजनशक्ति पार्टी के एक सांसद प्रिंस राज के विरुद्ध बलात्कार संबंधी प्राथमिकी एक महिला ने दर्ज कराई। इनके माता पिता ने कितने अरमानों से इनका नाम 'प्रिंस ' भी रखा और 'राज ' भी कि बड़ा होकर उनका नौनिहाल किसी 'प्रिंस' की तरह 'राज' करेगा। परन्तु इनके आचरण के चलते इनके भाग्य में तो बलात्कार का आरोपी बनना लिखा था। अब ऐसे युवा 'माननीयों ' के युवा समर्थकों की फौज इनसे क्या प्रेरणा लेगी ? वे अपने इर्द गिर्द की महिलाओं को क्या सम्मान की नजरों से देखेंगे या 'भोग्या ' की नजरों से ?

अफगानिस्तान में तालिबानी राज हो या न हो परन्तु वहां से कभी किसी 'निर्भया ' जैसे हादसे की खबर नहीं आती ,जबकि हमारे देश के अखबार तो अक्सर बताते रहते हैं कि देश में एक और 'निर्भया काण्ड ' हुआ। यह मानसिकता तालिबानी मानसिकता नहीं बल्कि 'राक्षसीय मानसिकता' है क्योंकि महिलाओं को खुली आजादी न देकर तो तालिबानी लोग 'शरिया ' की आड़ ले लेते हैं परन्तु कब्र से खोद कर बलात्कार करने,धर्म के आधार पर बलात्कारियों का साथ देने और पीड़िता के विरुद्ध खड़े होने,धर्म गुरुओं व नेताओं तथा अनेकानेक विशिष्ट व्यक्तियों व 'माननीयों ' द्वारा हमारे देश में महिलाओं के साथ जो बर्ताव किया जाता है अथवा जो नजरिया रखा जाता है उसे तो न कोई धार्मिक शिक्षा सही ठहरा सकती है न कोई तर्क अथवा समाजशास्त्र। देवियों की पूजा करना और कन्याओं की कंजक पूजा आदि कार्यकलाप उस समय धरे के धरे रह जाते हैं जब देश के किसी भी कोने से बलात्कार,सामूहिक बलात्कार व बलात्कार के बाद नश्शंस हत्याओं यानी 'निर्भया काण्ड ' दोहराये जाने जैसे खबरें आती रहती हैं। उस समय यह जरूर सोचना पड़ता है कि क्या इन्हीं बलात्कारी मानसिकता के लोगों को हर समय अफगानी महिलाओं के 'हितों की चिंता सताये रहती है ?

संस्कृति विहीन शिक्षा प्रणाली

–डा. वरिंदर भाटिया–

कुछ दिन पहले 9 सितंबर को मुझे पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड के उपाध्यक्ष के तौर पर हिमाचल स्कूल शिक्षा बोर्ड धर्मशाला द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पर आयोजित एक हाई लेबल की कार्यशाला में शामिल होने का मौका मिला, जिसमें हिमाचल के दो बार के मुख्यमंत्री व पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री शांता कुमार जी और कांगड़ा के माननीय संसद श्री किशन कपूर भी शामिल थे। हिमाचल स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में पंजाब की तरह प्रोग्रेसिव काम कर रहा है। इस मंच पर जहां मुझे पंजाब द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर किए जा रहे प्रयास को हिमाचल स्कूल बोर्ड के अध्यक्ष व उच्च शिक्षा अधिकारियों के साथ एक सार करने का अवसर मिला, वहीं माननीय शांता जी द्वारा शिक्षा और भारतीय संस्कृति की बढ़ती दूरी पर चिंता दिल को छू गई। उनकी बात महत्त्वपूर्ण लगी कि अब सामाजिक विसंगतियों पर नकेल डालने का एकमात्र तरीका चरित्र मूल्यों को विकसित करने वाली शिक्षा है। भारतीय संस्कृति देश में सभी धर्मों में मौजूद उच्च कोटि के विचारों का समुद्र है। हमें शिक्षा में भारतीय संस्कृति के संयोग और उसके मर्म को किसी समुदाय विशेष से न जोड़ते हुए शिक्षा में भारतीयता के महत्त्व को गहराई से समझना और विचारना चाहिए।

मेरा अल्प ज्ञान कहता है कि शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग कार्य और विचार की नई पद्धतियां सीखते रहते हैं। उससे व्यवहार में ऐसे बदलाव लाने को बढ़ावा मिलता है, जिनसे मनुष्य की स्थिति में सुधार आए। छात्रों में एक सामाजिक भाव की संस्कृति पनपने में शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक छात्र के जीवन पर और स्कूल में उसकी हो रही शिक्षा पर शिक्षा विभाग, अधीक्षक, स्कूल बोर्ड इतना ही नहीं, स्कूल के प्रिंसिपल से भी उस स्कूल की संस्कृति का ज्यादा गहरा प्रभाव होता है। स्कूलों में भारतीय शिक्षा संस्कृति को अपना कर छात्रों को विरासत, लोग और समाज के बारे में सिखा सकते हैं. जिससे उनमें एक जिम्मेदारी और नागरिकता की भावना आकार लेगी। उनमें स्व–मूल्य और गौरव जगा सकते हैं, जिससे उनके आत्मविश्वास और विकास में वश्द्धि होगी। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय और अन्य संस्थाएं विचारपूर्वक अपनी सांस्कृतिक विरासत प्रसारित करती हैं। संस्कृति शिक्षा का अभिन्न भाग है। भाषा समाजीकरण और शिक्षा में अहम भूमिका अदा करती है। छात्रों का अपने देश की स्थानीय भाषाओं से परिचित होना जरूरी है। हम शिक्षा में चरित्र मूल्यों की निरंतरता के लिए समाज के बुजुर्गों की मदद ले सकते हैं, क्योंकि वो शिक्षा के संस्कृतिकरण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके पास अक्सर ऐसी कहानियां और कौशल होते हैं, जिनके बारे में आज की पीढ़ी अनजान होती है। मानव के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के रूप में संस्कृति में विचार व व्यवहार दोनों के ही तरीके सम्मिलित होते हैं, जिनके प्रति व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्ष जागरूक होते हैं और यह जागरूकता व्यक्ति को एक सुलझा हुआ व्यक्तित्व प्रदान करती है, जिसके फलस्वरूप उसका व्यक्तित्व संपूर्ण एवं संगठित रूप में उभरकर हमारे समक्ष प्रकट होता है। छात्र समाज का एक अंग होता है तथा वह जब विद्यालय में प्रवेश करता है तो वह संस्कृति जानता है, जो उसके परिवार विशेष से संबंधित होती है। अध्यापक व विद्यालय उसे समाज की संस्कृति के अनुकूल ढालने का प्रयास करते हैं। सांस्कृतिक मूल्यों का अनुशासन पर भी प्रभाव पड़ता है।

जिस समाज में अधिनायक तत्त्व होगा, वहां दमनात्मक अनुशासन होगा एवं जहां प्रजातंत्र होगा, वहां स्वतंत्र अनुशासन होगा। सांस्कृतिक मूल्य मनुष्य का सामाजिक वातावरण से समायोजन करती है। प्रत्येक समाज की आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियां भिन्न–भिन्न होती हैं एवं इसके साथ ही प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि अपने समाज की विभिन्न परिस्थितियों के साथ स्वयं का अनुकूलन कर सके। संस्कृति व्यक्ति को इतना सूक्ष्म बनाती है कि व्यक्ति स्वयं को सामाजिक पर्यावरण के अनुकूल ढालता है। सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रभाव हमेशा रहा है। प्रत्येक समाज में शिक्षा के कुछ उद्देश्य शाश्वत होते हैं एवं कुछ सामाजिक, यह दोनों ही उद्देश्य संस्कृति के आदर्शों, मूल्यों व प्रारूपों से प्रभावित होते हैं। उदाहरणार्थ भारतीय संस्कृति के कुछ शाश्वत मूल्य हैं जैसे आध्यात्मिक, मानव सेवा, परोपकार आदि। शिक्षा में इन्हें ऊंचा स्थान दिया जाना चाहिए। सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षा पद्धतियों पर भी प्रभाव होता है। प्राचीन संस्कृति में गुरु को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। सांस्कृतिक मूल्यों का अध्यापक पर व्यापक प्रभाव है। शिक्षक समाज का एक सदस्य होता है व उसमें ही वह विकसित होता है।

अतरू समाज व संस्कृति का प्रभाव उसके आचरण व विचारों पर पड़ता है एवं समाज उन्हीं अध्यापकों को अच्छा समझता है जो सांस्कृतिक विरासत व मूल्यों का सम्मान करता है। चूंकि ऐसा ही शिक्षक बच्चे को सही दिशा दिखा सकता है। जो शिक्षक संस्कृति की उपेक्षा करता है, वह छात्रों का सांस्कृतिक विकास कदापि नहीं कर सकेगा। विद्यालय की सभी गतिविधियां एवं कार्यक्रम सांस्कृतिक आदर्शों व परंपराओं पर आधारित होते हैं। इसी कारण विद्यालय संस्कृति को विकसित करने व सुधारने में सहायक होता है। विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित विद्यालय उसी संस्कृति का प्रसार व प्रचार करते हैं, जिस पर वह आधारित है। समाज शिक्षा के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है तो ठीक उसी प्रकार शिक्षा भी समाज को प्रत्येक पक्ष पर प्रभावित करती है, चाहे आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक स्वरूप हो। शिक्षा का प्रारूप समाज के स्वरूप को बदल देता है क्योंकि शिक्षा परिवर्तन का साधन है। समाज प्राचीनकाल से आज तक निरंतर विकसित एवं परिवर्तित होता चला आ रहा है क्योंकि जैसे–जैसे शिक्षा का प्रचार–प्रसार होता गया, इसने समाज में व्यक्तियों की परिस्थिति, दृष्टिकोण, रहन–सहन, खानपान, रीति–रिवाजों पर असर डाला और इससे संपूर्ण समाज का स्वरूप बदला।

शिक्षा समाज के व्यक्तियों को इस योग्य बनाती है कि वे समाज में व्याप्त समस्याओं, कुरीतियों, गलत परंपराओं के प्रति सचेत होकर उनकी आलोचना करते हैं और धीरे–धीरे समाज में परिवर्तन होता जाता है। शिक्षा समाज के प्रति लोगों को जागरूक बनाते हुए उसमें प्रगति का आधार बनाती है। जैसे शिक्षा पूर्व में वर्ग विशेष का अधिकार थी, जिससे कि समाज का रूप व स्तर अलग तरीके का या अत्यधिक धार्मिक कट्टरता, रूढिढ वादिता एवं भेदभाव या कालांतर में शिक्षा समाज के सभी वर्गों के लिए अनिवार्य बनी जिससे कि स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक प्रगति एवं सुधार स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। शिक्षा समाज की संस्कृति एवं सभ्यता के हस्तांतरण का आधार बनती है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के इस कार्य की आवश्यकता एवं प्रशंसा करते हुए लिखा है, 'संस्कृति ही मानव जीवन की आधारशिला और मुख्य वस्तु है। यह आपके आचरण और व्यक्तिगत व्यवहार की छोटी से छोटी बातों में व्यक्त होनी चाहिए। राष्ट्रपिता की यह बात और स्वामी विवेकानंद जैसे अनेक राष्ट्र ऋषियों के शिक्षा को नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से ओत–प्रोत बनाने का बड़ा चौलेंज हकीकत में बदलने के लिए निरंतर प्रयासों की जरूरत है।

दूरदर्शनरू समाचार, संस्कार व संतुलन की पाठशाला

–डॉ. पवन सिंह मलिक–

दूरदर्शन, इस एक शब्द के साथ न जाने कितने दिलों की धड़कन आज भी धड़कती है। आज भी दूरदर्शन के नाम से न जाने कितनी पुरानी खट्टी–मिट्ठी यादों का पिटारा हमारी आँखों के सामने आ जाता है। दूरदर्शन के आने के बाद न जाने कितनी पीढ़ियों ने इसके क्रमिक विकास को जहाँ देखा है वही अपने व्यक्तिगत जीवन में इसके द्वारा प्रसारित अनेकों कार्यक्रमों व उसके संदेशों का अनुभव भी किया है। दूरदर्शन के पिछले छह दशकों की यात्रा गौरवपूर्ण रही है। सूचना, संदेश व मनोरंजन के साथ–साथ पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का कार्य भी दूरदर्शन ने बखूबी निभाया है। आज भी दूरदर्शन चौबीस घंटे के प्राइवेट चौनलों की भीड़ व बिना सिर पैर की खढ बरों के बीच अपनी प्रासंगिकता व कार्यशैली के कारण अडिग रूप से खड़ा है।

आज दूरदर्शन का जन्मदिन है। यानी 15 सितंबर 1959 में प्रारंभ हुआ दूरदर्शन, आज 62 साल का हो गया है। किसी भी मीडिया के लिए इतना लंबा कालखंड बहुत मायने रखता है। ऐसे में देश की 130 करोड़ जनसंख्या दूरदर्शन के सफल भविष्य की कामना करती है। यह अपनी पहचान को इसी प्रकार कायम रखते हुए, अपने लक्ष्यों से बिना डगमगाए नए कीर्तिमान स्थापित करता रहे। आज ही के दिन सन 1959 में दूरदर्शन का पहला प्रसारण प्रयोगात्मक आधार पर आधे घंटे के लिए शैक्षिक व विकास कार्यक्रमों के आधार पर किया गया था। उस दौर में दूरदर्शन का प्रसारण सप्ताह में सिर्फ तीन दिन आधे–आधे घंटे के लिए होता था। उस समय इसको 'टेलीविजन इंडिया' नाम दिया गया था। बाद में 1975 में इसका हिन्दी नामकरण 'दूरदर्शन' नाम से किया गया।

प्रारंभ के दिनों में पूरे दिल्ली में 18 टेलीविजन सेट और एक बड़ा ट्रांसमीटर लगा था। तब लोगों के लिए यह किसी आश्चर्य से कम नहीं था। तत्पश्चात दूरदर्शन ने अपने क्रमिक विकास की यात्रा शुरू की और दिल्ली (1965), मुम्बई (1972), कोलकाता (1975), चेन्नई (1975) में इसके प्रसारण की शुरुआत हुई। शुरुआत में तो दूरदर्शन यानी टीवी दिल्ली और आसपास के कुछ क्षेत्रों में ही देखा जाता था। लेकिन अस्सी के दशक को दूरदर्शन की यात्रा में एक ऐतिहासिक पड़ाव के रूप में देखा जा सकता है। इस समय में दूरदर्शन को देश भर के शहरों में पहुँचाने की शुरुआत हुई और इसकी वजह थी 1982 में दिल्ली में आयोजित किए जाने वाले एशियाई खेल। एशियाई खेलों के दिल्ली में होने का एक लाभ यह भी मिला कि ब्लैक एंड वाइट दिखने वाला दूरदर्शन अब रंगीन हो गया था।

आज की नई पीढ़ी जो प्राइवेट चौनलों के दौर में ही बड़ी हुई है या हो रही है। उसे दूरदर्शन के इस जादू या प्रभाव पर यकीन न हो, पर वास्तविकता यही है कि दूरदर्शन के शुरुआती कार्यक्रमों की लोकप्रियता का मुकाबला आज के तथाकथित चौनल के कार्यक्रम शायद ही कर पाएं। फिर चाहे वो 'रामायण' हो, 'महाभारत', 'चित्रहार' हो या कोई फिल्म, 'हम लोग' हो या 'बुनियाद', इनके प्रसारण के वक्त जिस तरह लोग टीवी से चिपके रहते थे, वह सचमुच अनोखा था। उस दौर में दूरदर्शन ने पारिवारिक संबंधों को वास्तविक रूप में चरितार्थ करके दिखाया। दूरदर्शन पर शुरू हुआ पारिवारिक कार्यक्रम 'हमलोग' जिसने लोकप्रियता के तमाम रिकॉर्ड तोड़ दिए थे। इसके बाद शुरू हुआ भारत और पाकिस्तान के विभाजन की कहानी पर बना 'बुनियाद' जिसने विभाजन की त्रासदी को उस दौर की पीढ़ी से परिचित कराया। इस धारावाहिक के सभी किरदार फिर चाहे वो आलोकनाथ (मास्टर जी) हो, अनीता कंवर (लाजो जी) हो, विनोद नागपाल हो या फिर दिव्या सेठ, ये सभी घर–घर में लोकप्रिय हो चुके थे। इसके अलावा 1980 के दशक में प्रसारित होने वाले मालगुडी डेज, ये जो है जिंदगी, रजनी, ही मैन, वाह जनाब, तमस, बुधवार और शुक्रवार को 8 बजे दिखाया जाने वाला फिल्मी गानों पर आधारित चित्रहार, रविवार को दिखाई जाने वाली फिल्म, भारत एक खोज, ब्योमकेश बक्शी, विक्रम बैताल, टर्निंग प्वाइंट, अलिफ लैला, शाहरुखढ खान की फौजी, रामायण, महाभारत, देख भाई देख आदि सूचना–संदेश व मनोरंजन से परिपूर्ण दूरदर्शन के इन सभी कार्यक्रमों ने देश भर में अपने प्रभाव व जादू से लोगों के मनों में एक अमिट छाप छोड़ी। वास्तव में उस समय लोगों के दिलों पर दूरदर्शन का राज चलता था।

मनोरंजन के साथ–साथ दूरदर्शन ने सदैव लोगों को शिक्षित व नैतिक बातों के आग्रह के लिए भी प्रेरित किया है और इसके लिए अपनी अहम भूमिका निभाई है। मीडिया में एजुटेंमेंट को स्थापित करने का श्रेय भी दूरदर्शन को ही जाता है। अगर विज्ञापनों की बात करें तो 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' ने जहाँ समाज को एकता के संदेश के साथ जोड़ा, वहीं 'बुलंद भारत की बुलंद तस्वीर' के द्वारा अपनी व्यावसायिक क्षमता का परिचय भी करवाया। कृषि प्रधान देश भारत में किसानों तक अपनी सीधी पहुँच बनाने में भी दूरदर्शन सफल रहा। सन 1966 में 'कृषि दर्शन' कार्यक्रम के द्वारा देश में हरित क्रांति के सूत्रपात का केंद्र बिंदु भी दूरदर्शन ही बना। सूचना देने के उद्देश्य से 15 अगस्त 1965 को प्रथम समाचार बुलेटिन का प्रसारण दूरदर्शन से किया गया था और यह सफर आज भी निरंतर जारी है।

कोरोना के इस दौर में भी हम सबने दूरदर्शन की सफलता व कीर्तिमान को एकबार फिर महसूस किया है। कोरोना की पहली लहर के दौरान अस्सी के दशक में दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों का पुनः प्रसारण रामायण, महाभारत, कृष्णा आदि को हमने परिवार के साथ बैठकर पूरे मनोयोग से देखा है। पिछले बासठ वर्षों से अब तक दूरदर्शन ने जो विकास यात्रा तय की है वह काफी प्रेरणादायक है। तकनीक व संचार क्रांति के इस समय में भी 93 प्रतिशत से अधिक घरों में दूरदर्शन की पहुँच बनी हुई है। आज भी हर एक भारतीय को इस पर गर्व है कि उसके पास दूरदर्शन के रूप में टेलीविजन का गौरवशाली इतिहास मौजूद है।

आज भी प्राइवेट चौनलों व निजी मीडिया घरानों के बीच में दूरदर्शन सबसे बड़ा, सबसे सक्षम और सबसे अधिक उत्तरदायी चौनल समूह के रूप में अपनी भूमिका को निभा रहा है। वास्तव में अर्थपूर्ण व समसामयिक कार्यक्रमों और भारतीय संस्कृति को बचाए रखते हुए देश की भावनाओं को स्वर देने का काम दूरदर्शन ने ही किया है। प्रारंभ से लेकर आज तक दूरदर्शन ने अपने स्थापित मूल्यों व लक्ष्यों को न केवल प्राप्त किया है बल्कि उनकी सार्थकता को कायम भी रखा है। आज दूरदर्शन के स्थापना दिवस पर इसकी सार्थकता, सामयिकता, पहुँच व नवाचार आधारित प्रयोगधर्मिता इसी प्रकार अक्षुण्ण बनी रहे, यही कामना व संदेश।

मातश्भाषा को मत छोड़िए

–डॉ. राकेश राणा–

जब हम अपनी मातश्भाषा सीख रहे होते हैं तो एक सोचने–समझने की पूरी विधि को अख्तियार कर रहे होते हैं। भाषा हमें हमारे परिवेश में प्रतिष्ठित करने वाली दृष्टि प्रदान कर रही होती है। यह बहुत नैसर्गिक प्रक्रिया की तरह हमारे जीवनानुभवों में सम्पन्न होती रहती है। इसकी ताकत, क्षमता और विस्तार की विशेषताएं उस भ्रूण के अंकुरण की तरह प्राथमिक स्तर पर ही तय हो जाती है जो भावी संसार बनाने वाला है। भाषा का अपने समाज और संस्कृति से अनन्य संबंध है। बेशक मनुष्य के पास भाषा सीखने की अद्भुत क्षमता है पर वह भाषा को तभी सीख पाता है जब उसे एक भाषायी समाज का परिवेश प्राप्त हो।

एक ओर जहां समाज के माध्यम से ही भाषा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे पहुँचती है तो दूसरी ओर भाषा के माध्यम से ही समाज संगठित और संचालित रहता है। भाषा के अभाव में सामाजिक संरचना धराशायी हो जाएगी। इसी तरह भाषा का अपनी संस्कृति से गहरा संबंध होता है। भाषाई मजबूती संस्कृति की मजबूती पर बहुत निर्भर करती है। दुनियावी अनुभव बताते हैं कि वे ही समाज बौद्धिक और नैतिक दृष्टि से सफल सिद्ध हुए हैं जिनमें भाषाई समश्द्धि बनी रही। उन्हीं समाजों ने विज्ञान और तकनीकी में तरक्की की है जिनकी समश्द्ध भाषाओं ने अपने–अपने विषयों में प्रगति की। किसी भी संस्कृति और विज्ञान का विकास भाषा की धरातल पर ही निर्भर करता है।

परम्परागत समाजों की संस्कृतियां अपनी रुढ़ियों, अंधविश्वासों और अंध–आस्थाओं के चलते सामाजिक–सांस्कृतिक वर्जनाओं का विस्तार करते हुए नए क्षैतिजों का निषेध करती जाती है। अपने शिक्षा माध्यमों को बांझ बना लेती है। संसार के नए वैज्ञानिक रूपों के निरन्तर नकार की यह प्रवश्त्ति और रुढ़िवादिता का यह रुकावटी रवैया हमें भाषाई रूप से कभी समश्द्ध नहीं होने देता है। नतीजतन ऐसे समाज वैज्ञानिक सिद्धांतों को समझने में असमर्थ ही बने रहते हैं। इसलिए सिर्फ संस्कृति को ही विकसित करना अथवा केवल भाषा को ही समश्द्ध बनाना एकांगी विकास होगा। एक विकसित समाज के निर्माण की दिशा में संस्कृति और भाषा को समानांतर रूप से विकसित करने की जरूरत होती है। इसी तरह भाषा शिक्षा से जुड़ी है। शिक्षण का मातश्–भाषाई माध्यम सिर्फ सुगमता ही नहीं लाता है बल्कि उसकी प्रभाविकता भी इससे जुड़ी होती है। प्रसिद्ध चिंतक 'जीरोम ब्रुनर' यही कहते हैं कि 'बच्चे अपने समाज और संस्कृति को ग्रहण करते हुए बड़े होते हैं, समाज व संस्कृति उनके सीखने के स्वभाव का निर्धारण करते हैं। बहुत हद तक उसके इस स्वभाव से निर्धारित होता है कि बच्चा क्या सीखेगा और किन बातों को सीखना उसके लिए आसान होगा। एक शिक्षक के लिए ये महत्वपूर्ण बातें हैं।' अतः संस्कृति और शिक्षा के अतःसंबंध में भाषा अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। किसी भी समुदाय, समाज और संस्कृति की समश्द्धि का पैमाना उसकी भाषा होती है। एक बड़ी आम धारणा है कि किसी जाति या संस्कृति को समाप्त करना हो तो पहले उसकी भाषा को समाप्त करो। वह जाति या संस्कृति स्वतः ही समाप्त हो जायेगी। भाषा लुप्त होने पर न केवल संस्कृति विलुप्त होती है अपितु साहित्य और इतिहास भी अतीत के गर्त में खो जाते है। 'साइंटिफिक अमेरिकन माइंड' में जाने–माने भाषा वैज्ञानिक 'डा. कौरे बिन्स' लिखते हैं कि विश्व में सात हजार भाषाएं हैं जिनमें से प्रत्येक माह दो भाषाएं मर रही है। उनके साथ अनेकानेक संततियों से प्राप्त सांस्कृतिक ज्ञान तथा मानव मस्तिष्क का रहस्यमय शब्द प्रेम भी सदा के लिए लुप्त हो रहा है। मातश्भाषाएं केवल संवाद के लिए नहीं होती है वे संस्कृति के निर्माण और विकास की दिशा में मार्गदर्शक होती है। आधुनिक वैश्विक दुनिया में जिसे 'सूचना समाज' की संज्ञा दी जा रही है इसने भाषाई वर्चस्व का मोर्चा खोल दिया है। मीडिया और सोशल मीडिया के मैदान में भाषाएं अपने शक्ति–प्रदर्शन पर उतारू है। दुनिया की तमाम भाषाएं अपनी–अपनी मारक क्षमता के साथ सांस्कृतिक वर्चस्व स्थापित कर बजरिए बाजार सत्ता और शक्ति के नए प्रतिमान स्थापित करने की होड़ में है। नतीजतन विकासशील समाज पहचान के संकट के कगार पर पहुंच चुके हैं। वहीं विकसित समाज तो अपनी भाषा को बचाए हुए हैं और अपनी संस्कृति को विस्तार के नए क्षैतिज दे रहे हैं। भाषा वह भी है जो हमारी सोच, व्यवहार, रुचि और मानसिकता को गढ़ती है। लिखत–पढ़त वाली भाषा से ज्यादा उस मनोभाषा और देहभाषा को समझना जरुरी है जो भाषाई संरचना में निहित सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक–राजनीतिक तत्वों को तैयार करती है। इसलिए भाषाई संदर्भ की समझ सिर्फ शाब्दिक अर्थों तक सीमित नहीं है बल्कि उन सभी आयामों, संदर्भों और दृष्टिकोणों में विसरित है जो 'भाषा' का निर्माण करते है या सीधे कहें तो जो भाषिक मनोविज्ञान निर्मिति करते है और उस सामाजिक गढ़त के पीछे काम करते है जो भाषा को शक्तिशाली बनाते है। भाषा मात्र संप्रेषण का माध्यम नहीं होती है यह तो उसका साधारण नैसर्गिक दायित्व है। भाषा के साथ सत्ता, शक्ति, वर्ग सब शामिल हैं। भाषा की राजनीति पुरानी परिणति है। भाषा शासन–प्रशासन की शक्ति सहयोगिनी के रूप में पुराने समय से काम करती आयी है। वह सामाजिक करेंसी की तरह काम करती रही है। विशिष्ट वर्गों के निर्माण में सामाजिक–आर्थिक असमानताएं स्थापित करती रही है। जो सत्ता संरचना के काम आते हैं। पिछड़े समाजों की भाषा–बोली लगभग लुप्त होने की तरफ बढ़ रही हैं। वैश्विक स्तर पर बड़ी भाषाओं ने छोटी भाषाओं के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया है। वैश्वीकरण के दबाव में दुनिया की 6700 बोली जाने वाली भाषाओं में से 40 प्रतिशत भाषाएं लुप्त होने के कगार पर हैं। जबकि इन भाषाओं में उस समाज की संस्कृति और उनका हजारों–हजार वर्ष का ज्ञान सन्निहित है। हजारों आदिवासी भाषाएं जो अपनी जड़ों से जुड़ी है। सदियों के जीवन अनुभवों से उपजी ये भाषएं पर्यावरण के गहरे सरोकारों में रची–बसी हैं। इनमें ज्ञान की अथाह राशि सन्निहित हैं। आधुनिक विकास की होड़ ने परम्परागत ज्ञान के उस अगाध भंडार को विकास की होड़ में दफना दिया है। विकास के नाम पर जंगलों का सफाया, उन आदिवासी भाषाओं और संस्कृतियों का भी सफाया कर रहा है जो देशज और मौलिक ज्ञान के अजस्र स्रोत थे। इन आदिवासी भाषाओं में ज्ञान की जो विशिष्टता निहित है उसका संरक्षण और संवर्द्धन नव–सश्जन के स्फुरण की क्षमता रखता है। ऐसे ज्ञान–बीज की विलुप्ति एक पूरी भाषाई सभ्यता और संस्कृति की समाप्ति है जो बहुत सारे सामाजिक–सांस्कतिक जीन विश्व को मुहैया करा सकती थी इसलिए अपनी भाषा को मत छोड़िए।

भाषा का संरक्षण और संवर्द्धन अपने अस्तित्व को आख्यायित करना है। मातश्भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में विकसित करने का मतलब है अपने समाज और देश की संप्रेषण प्रक्रिया को सुदृढ़, व्यापक और सशक्त बनाना। क्योंकि मातश्भाषा वह सामाजिक वास्तविकता है जो व्यक्ति को अपने भाषायी समाज के विभिन्न सामाजिक संदर्भों से जोड़ती है और उसकी सामाजिक अस्मिता का निर्धारण करती है। इसी के आधार पर व्यक्ति अपने समाज और संस्कृति से जुड़ा रह सकता है। भाषा ही समाज में संस्कृति और संस्कारों की संवाहक होती है। भाषा व्यक्ति को अपनी सौंधी गंध में समाजीकृत करती है उसे सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान प्रदान करती है। व्यक्ति के बौद्धिक विकास के साथ–साथ उसकी संवेदनाओं और अनुभूतियों की सहज–स्वाभाविक अभिव्यक्ति अपनी भाषा में ही होती है।

(लेखक समाजशास्त्री हैं।)

किसान आन्दोलन के अगुआकार राकेश टिकैत जी के सीतापुर आगमन के लिए तैयारियां जोरों पर

अवध की आवाज ब्यूरो

सीतापुर। सितंबर किसान आन्दोलन के अगुआकार राकेश टिकैत जी के सीतापुर आगमन के लिए तैयारियां जोरों पर हैं। किसान सभा के लिए जगह चिन्हीकरण को लेकर,संयुक्त मोर्चा पदाधिकारी व जिला प्रशासन के बीच चर्चा हुई,और यह निर्णय लिया गया कि शहर से बाहर,नवीन चौक बाई पास चौराहे पर स्थित गौशाला मैदान पर आयोजन किया जाए। शहरी आबादी से बाहर मैदान का क्षेत्रफल, और वाहन खड़ा करने की उचित व्यवस्था से द्रष्टिगत,गौशाला मैदान को कार्यक्रम स्थल की अनुमति जिला प्रशासन द्वारा दी गई। संयुक्त किसान मोर्चा प्रभारी पिंदर सिंह षसिद्धू ने कहा कि सभी किसान भाइयों के साथ मजदूर और बेरोजगार साथियों को कार्यक्रम की सफलता में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना होगा! समाजसेवी ऋचा सिंह ने कहा किसानों और गरीबों के साथ हो रहे अन्याय के विरुद्ध आवाज बुलंद करने का समय आ चुका है!हम सभी को अपने हकों के लिए संघर्ष करना होगा। किसान नेता गुरुपाल सिंह ने कार्यक्रम की

सफलता हेतु साथियों का आवाह्न करते हुए सभी किसान साथियों से दस बजे कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने कि अनुरोध किया। किसान नेत्री अल्पना सिंह ने महिलाओं से कार्यक्रम में शामिल होने का निवेदन किया,और कहा कि अपने हकों के लिए सड़कों पर संघर्ष करने की जरूरत है। जिसमें महिलाओं को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। संयुक्त मोर्चा सदस्य शिव प्रकाश सिंह ने कहा कि सत्ता पक्ष के लिए नासूर बन चुके इस किसान आन्दोलन की अनदेखी भाजपा को बहुत मंहगी पड़ेगी! उन्होंने कहा कि हम सभी का दायित्व बनता है कि,सीतापुर सहित पड़ोसी जनपदों से किसान,मजदूर और बेरोजगार साथी अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

ऋषभ प्रताप सिंह की अगुवाई में वन विभाग की टीम जुटी तेंदुआ को ढूंढने में

अवध की आवाज ब्यूरो

निघासन खीरी। कई दिनों से लगातार तेंदुआ द्वारा लोगो पे किये जा रहे। हमले से लोगो मे दहशत का माहौल बना हुआ है। पर वही दूसरी तरफ वन दरोगा ऋषभ प्रताप सिंह द्वारा अपनी पूरी टीम के साथ इधर उधर लोगो से

जानकारी लेकर तेंदुआ को पकड़ने का पूरा प्रयास किया जा रहा है। उचित सूचना न मिलने से टीम तेंदुआ को पकड़ने में असमर्थ है। पर ऋषभ सिंह से बात करने पे बताया गया। की हम लोग जल्द ही तेंदुआ को पकड़ लेगें इसमें आप लोगो को ज्यादा घबराने की जरूरत नही है। रात में जब भी खते बचने के लिए निकले आग जलाने वाली सामग्री ले कर जाए या फिर हाथ मे लाठी साथ मे हो अगर आप को सही में तेंदुवा दिखा है तो आप हमें तुरंत ही फोन करे।सही सूचना दे और ज्यादा घबराने की जरूरत नही है मेरी पूरी टीम कड़ी मेहनत कर रही है।जल्द ही तेंदुआ को पकड़ लिया जायेगा।बस आप सभी लोगो से मेरा विनम्र निवेदन है कि आप लोग भी हमारी टीम का पूरा सहयोग करे भृमित खबर न देकर सही खबर दे जिससे उस तेंदुवे को जल्द ही पकड़ सकें। तेंदुवे को पकड़ने में जुटी टीम ऋषभ प्रताप सिंह वन दरोगा, टीम लीडर बृजेश शुक्ला ,वनरक्षक भूपेंद्र ,नरेंद्र सिंह , समस्त दैनिक श्रमिक के साथ तेंदुए की निगरानी हेतु प्रभावी गस्त।

भाजपा नेता जनप्रिय सेवक मा संजय शुक्ला का भव्य स्वागत

अवध की आवाज ब्यूरो

उन्नाव। उन्नाव वरिष्ठ भाजपा नेता जन प्रिय सेवक मा0 संजय शुक्ला जी ने कानपुर उन्नाव सीमा जाजमऊ गंगा पुल स्थित बालाजी दरबार में आयोजित भव्य कीर्तन,सुंदर काण्ड/प्रसाद वितरण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुये जहां पर उनका जोरदार स्वागत कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया। मुख्य रूप से सुमित तिवारी सभासद कैंट कानपुर,अनिल निषाद प्रधान,वी के मिश्रा, अर्पित शुक्ला, संजय सिंह आदि मौजूद रहे।।

एनटीपीसी सिंगरौली में कवि सम्मेलन के साथ हिन्दी दिवस मनाया गया

अवध की आवाज ब्यूरो

मध्य प्रदेश। जिला सिंगरौली शक्तिनगर सोनभद्र एनटीपीसी–सिंगरौली सुपर थर्मल पावर स्टेशन में 14 सितम्बर–2021को हिन्दी दिवस के अवसर पर कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । हिन्दी दिवस के अवसर पर स्टेशन प्रमुख श्री

बसुराज गोस्वामी ने अपने विचार रखते हुए सभी को हिन्दी दिवस की बधाई दी तथा सभी अधिकारियों, कर्मचारियों से अपने कार्यालयीन कामकाज हिन्दी में काम करने का निर्देश दिया। उन्होने हिन्दी भाषा की सरल –सहज अभिव्यक्ति की चर्चा करते हुए हिन्दी भाषा को एकता की कड़ी एवं संवाद का सबसे मजबूत माध्यम बताया। इस अवसर पर वि. शिवा प्रसाद, विभागाध्यक्ष मानव संसाधन ने राजभाषा के विकास में काव्य मंच के योगदान पर विचार रखते हुए कार्यक्रम से जुड़ने के लिए सम्मानित कविगण का अभिनंदन किया। माइक्रोसाफट टीम्स के माध्यम से आयोजित कवि सम्मेलन में डा0 योगेन्द्र मिश्र , एनसीएल खड़िया के वरिष्ठ प्रबंधक – पाणि पंकज पाण्डेय, डा0विजेन्द्र कुमार शुक्ल, प्रबंधक योजना एवं पद्धतिए, श्री शोभनाथ सिंह यादव अभियन्ता प्रचालन, रवीन्द्र मिश्र, ने अपने ओजस्वी काव्य कृति से श्रोताओं को खूब आनंदित किया।

कवि सम्मेलन आरंभ पूर्व कवि मंत्र की परंपरानुसार रवीन्द्र मिश्र ने "वाणी वंदना के रूप में वर दे वीणा वादिनी वर दे एवं तू जिंदगी में सिर्फ यही काम किए जा आराम किए जा आराम किए जा तथा भूतकाल भी दूर है भविष्य है दूर वर्तमान पास है इसे जिए भूरपूर", सुनाकर श्रोताओं को जीवन जीने की कला का बोध कराया। श्री शोभनाथ सिंह यादव ने सबसे सरल हिन्दी कविता का वाचन करते हुए एनटीपीसी पर आधारित काव्य पाठ किया । पाणि पंकज पाण्डेय ने भगवान राम के जीवन चरित्र को केन्द्रित कविता "जीवन पथ पर मोल नहीं है थक कर थमने वालो का कर्म पथ बढ़ा चले जो जीवन उन मतवालों का तथा कांटों पर भी फूल सदृश, जो चले वो सच्चा ज्ञानी है, पौरूष का पर्याय वहीं वहीं रामचन्द्र का ज्ञानी है" सुना कर त्याग मय जीवन का संदेश प्रदान किया ।

वहीं डा0 योगेन्द्र मिश्र ने हिन्दी की अभ्यर्थना में, "मै हिन्दी हूँ / मै सदियों का आवाह्न हूँ मै वर्तमान की पाती हूँ ।मै हिन्दी हूँ, मैं हिन्दी हूँ। हिन्दुस्तान की थाती हूँ",सुनाकर खुब सराहे गये । डा0 बृजेन्द्र शुक्ल ने "आइए हम सब मिल अनुबंध ये करें सौमनष्य से वैमन्सय की खाइयां भरे सुनाकर श्रोताओं को आनंदित किया"। मंच के माननीय अध्यक्ष श्री विनय कुमार अवस्थी अपर महाप्रबंधक तकनीकी सेवाएं ने राजभाषा पखवाड़ा के संवैधानिक पक्षों को रखते हुए "प्यार मातृभाषा के करना जैसे करते मां से प्यार, बनी राजभाषा हिन्दी को हर संभव देना विस्तार हिन्दी बोलो, उर्दू बोलो मगर बोलना मधुर वचन बोल रहे हो हिन्दी तो" कर शुद्ध उच्चारण का संदेश दिया कार्यक्रम के आयोजक श्री ओमप्रकाश, वरिष्ठ प्रबंधक मा0 संसाधन–राजभाषा के आभार ज्ञापन से कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

हिंदी दिवस के सुअवसर पर एनटीपीसी विंध्याचल द्वारा ऑनलाइन अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का किया गया आयोजन

अवध की आवाज ब्यूरो

मध्य प्रदेश। जिला सिंगरौली एनटीपीसी विंध्याचल प्रबंधन द्वारा इस वैश्विक महामारी के समय में भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसार सामाजिक दूरी का पालन करते हुए हिंदी दिवस के अवसर पर माइक्रोसॉफ्ट टीम के माध्यम से ऑनलाइन अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर कार्यकारी निदेशक विंध्याचल मुनीश जौहरी नें अपने उद्बोधन में ऑनलाइन के माध्यम से जुड़े सभी को बधाई देते हुये कहा कि 14 सितंबर, 1949 को हमारे संविधान सभा नें हिंदी को हमारे देश की राजभाषा के रूप मैं स्वीकार किया गया तभी से इस दिवस को याद रखने के लिए हर वर्ष 14 सितंबर की हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार केंद्र सरकार के अधीन आने वाले सभी कार्यालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के कार्यालय प्रमुख को राजभाषा हिंदी के अनुपालन का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। एनटीपीसी लिमिटेड भारत में विद्युत क्षेत्र की सबसे बड़ी महारत्न कंपनी है और विद्युत उत्पादन के साथ साथ देश के विकास को गति देते हुये राजभाषा के कार्यान्वयन की दिशा में भी अग्रणी है। हिंदी हमारे लिए संप्रेषण का माध्यम ही नहीं, बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय संस्कृति एवं एकता की सहज पहचान है।

यह भारतीयता की पहचान और एकता की भाषा है। अतः हमें अपने देश की भाषा पर गर्व है। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं के चलते इसे संविधान में महत्त्व देते हुए राजभाषा के पद पर स्थापित किया गया है। इस अवसर पर ऑनलाइन के माध्यम से जुड़े सभी कविगणों को भी बधाई दी तथा उम्मीद जताई कि यह ऑनलाइन अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन लोगों को हिंदी के प्रति अभिरुचि जगाने में सार्थक सिद्ध होगा। महोदय नें हास्य कवि सम्मेलन की सफलता हेतु अपनी शुभकामनाएं दी।

अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) प्रबीर कुमार बिस्वास ने अपने स्वागत सम्बोधन के जरिये ऑनलाइन के माध्यम से जुड़े सभी कवियों का अभिनंदन किया तथा हिंदी दिवस की महत्ता एवं एनटीपीसी विंध्याचल द्वारा किए जा रहे कार्यों के विषय में सभी को अवगत कराया तथा राजभाषा द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री एल.एम. पाण्डेय, उप प्रबंधक (मानव संसाधन) नें मुख्य अतिथि व अन्य गणमान्य अतिथियों एवं कवियों का स्वागत किया तथा राजभाषा पखवाड़ा, 2021 के दौरान ऑनलाइन आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विषय में जानकारी दी।

हास्य कवि सम्मेलन में माइक्रोसॉफ्ट टीम के माध्यम से देश के विभिन्न प्रांतो से जुड़े प्रतिष्ठित कविगणों नें भाग लिया तथा अपनी–अपनी रचनाओं को सुनाकर सभी का भरपूर मनोरंजन किया।

हास्य कवि सम्मेलन का संचालन लखनऊ के हास्य कवि सम्राट,

मुकुल महान द्वारा किया गया। कवि मुकुल महान नें हिंदी की महता बताते हुये कहा की "छत्तीस व्यंजन तेरह स्वर से, दुनिया भर को जोड़ रही हिंदीद" एवं एकतरफा प्यार पर हास्य व्यंग्य की कविता" जिसे प्रेम तुम समझ रहे हो

आदि विभिन्न प्रस्तुतियों से लोगों का दिल जीत लिया तथा सभी दर्शकों को वाह–वाह करने पर मजबूर कर दिया। हास्य कवि सम्मेलन का शुभारंभ डीएफओ रेनूकूट मनमोहन मिश्र द्वारा हुई जिन्होनें हिंदी दिवस पर कविता "सीधी साधी जबान है हिंदी, देश की आन बान है हिंदी के साथ–साथ अन्य कवितायें सुनाकर सभी को ताली बजाने पर मजबूर कर दिया । तत्पश्चात बाराबंकी से जुड़े विकास बौखल जी नें अपनी कविता "प्रेमी प्रेमिका को जोड़ रहा है, तथा दूसरी कविता "सुबह सुबह पत्नी बोली " वाली अपनी कविता सुनाकर सभी को भाव विभोर कर दिया।

हास्य कवि सम्मेलन को आगे बढाते हुए कानपुर से जुड़े हास्य सम्राट, हेमंत पाण्डेय जी नें "पाकिस्तान की औकात है " एवं "नशे में हिलता हुआ, एक व्यक्ति" हास्य व्यंग्य वाली कविता से लोगो का दिल जीत लिया। इसके पश्चात गंगा की नगरी बनारस से जुड़े हास्य कवि डांडा बनारसी जी नें अपनी कविता " भीड़ में जाओ, या भाड़ में जाओ, एवं दूसरी कविता एक लड़की से प्यार हुआ को सुनाकर सभी को सभी वाह–वाही करने पर मजबूर कर दिया।

कार्यक्रम का समापन अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री स्नेहाशीष भट्टाचार्य के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

कार्यक्रम के दौरान मुख्य महाप्रबंधक (एस एस सी एन आर) श्री विपन कुमार, महाप्रबंधक(प्रचालन एवं अनुरक्षण), श्री एस बंद्योपाध्याय, अन्य महाप्रबंधकगण, विभागाध्यक्ष तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ–साथ विभिन्न परियोजनाओ से माइक्रोसॉफ्ट टीम के माध्यम से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनो ने भी इस ऑनलाइन अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का भरपूर आनंद उठाया।

उप्र में सड़कों में गड्ढा है या गड्ढे में सड़क: मायावती

लखनऊ, (वेब वार्ता)। उत्तर प्रदेश की सड़कों की खराब हालत और गड्ढों पर सरकार को घेरते हुये बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती ने बुधवार को कहा कि उप्र के सड़कों की हालत फिर से इतनी ज्यादा खराब हो गई हैं कि लोग समझ नहीं पा रहे हैं कि सड़कों में गड्ढा है या गड्ढे में सड़क। उन्होंने एक ट्वीट में कहा , ''उप्र में कानून व स्वास्थ्य व्यवस्था की तरह ही यहाँ के सड़कों की भी दुर्दशा व खढ स्ताहाली से आमजनजीवन काफी बेहाल है तथा गड्ढों में पानी भर जाने से सड़क हादसों व इसमें होने वाली दर्दनाक मौतों की खढ बरों से अखढ बार भरे पड़े हैं, यह अति–दु:खद व सरकार की विफलता का जीता–जागता प्रमाण। मायावती ने कहा, ''सड़कें लोगों की बुनियादी जरूरत व विकास से विशेषतः जुड़ी हुई हैं तथा इनके बारे में भी सरकार चाहे जितने भी नारे व दावे कर ले लेकिन उप्र के सड़कों की हालत फिर से इतनी ज्यादा खराब हो गई हैं कि लोग समझ नहीं पा रहे हैं कि सड़कों में गड्ढा है या गड्ढे में सड़क। सरकार ध्यान दे।

डेगू पर प्रहार अभियान का हुआ सुभारंभ , विधायक सिंगरौली एवं कलेक्टर ने मोरवा से की अभियान की सुरूआत

अवध की आवाज ब्यूरो

मध्य प्रदेश। जिला सिंगरौली नगर पालिक निगम सिंगरौली के मोरवा जोन वार्ड 8 से डेगू पर प्रहार अभियान की सुरूआत विधायक सिंगरौली राम लल्लू बैस, कलेक्टर राजीव रंजन मीना, भाजपा जिलाध्यक्ष बीरेन्द गोयल, नगर निगम आयुक्त आरपी सिंह के द्वारा की गई। इस दौरान बंगाली क्लब गली मे घर घर जाकर डेगू के लंक्षण एवं बचाव के तरीको को रहवासियो से साझा किया गया। अभियान की सुरूआत मोहल्ले के सभी घरो मे किटनाशक का छिड़काव, फोगिंग करते हुये नालो एवं परिसर की समुचित सफाई के साथ की गई। तत्पश्चात मलेरिया विभाग की टीम द्वारा घरो मे स्थिति कुलर, पानी टंकी एवं छतो मे रखे बर्तन इत्यादि की जॉच की गई और जहा जहा डेगू का लार्वा मिला उन्हे नष्ट करने हेतु दवाईयो का छिड़काव किया गया। तथा रहवासियो को नियमित अंतराल पर सफाई के लिए प्रेरित किया गया। मोहल्ला भ्रमण के दौरान विधायक एवं कलेक्टर द्वारा रहवासियो को डेगू से सुरंक्षा के लिए किये जाने वाले उपायो और प्रयासो को विस्तार से अवगत कराया गया। तथा निगमायुक्त को शहरी क्षेत्र के प्रत्येक घरो मे डोर टू डोर जाकर निरीक्षण करने का निर्देश दिया गया।और सफाई कार्य के लिए नियमित प्रयास करने की बात कही भ्रमण के दौरान कलेक्टर ने आयुक्त को निर्देश दिये कि निरीक्षण एवं सफाई के बाद जिन घरो मे डेगू का लार्वा मिले उन पर जुर्माने की कार्यवाही व्यावहार मे लाये। वैक्सीन महाअभियान के लिए पीला चावल देकर किया गया आमंत्रित:– विधायक श्री बैस एवं कलेक्टर श्री मीना ने इस दौरान 15 सितम्बर से 18 सितम्बर तक संचालित किये जाने वाले वैक्सीन महाअभियान को सफल बनाने के लिए नागरिको को घर घर जाकर पीला चावल

देकर शत प्रतिशत वैक्सीनेशन के लिए आमंत्रित किया और सभी को अपने आस पास के लोगो परिवार, समाज से टीका से वंचित व्यक्तियो को वैक्सीन सेंटर तक पहुचाने की अपील की। अभियान के सुभारंभ मे विधायक सिंगरौली श्री बैस ने कहा कि जिला प्रशासन और नगर पालिक निगम सिंगरौली संयुक्त रूप से अपने प्रयास प्रबल करते हुये जिले को डेगू मुक्त करने और वैक्सीनेशन मे शत प्रतिशत परिणाम के लिए संकल्पति भाव से कार्य करे। उन्होने कहा कि संकट प्रबंधन समिति, कोरोना वालेंटियर और सामाजिक संस्थाओ को प्रमुखता से इस अभियान मे जोड़े। वही कलेक्टर श्री मीना ने जन प्रतिनिधियो को पूर्ण अश्वासन दिया कि डेंगू से बचाव के लिए हर संभव प्रयास को गति दी जा रही है और वैक्सीन महाअभियान को सफल बनाने के लिए सामाज के सभी अंग जन प्रतिनिधि, सामाजिक संस्थाऐ एक सूत्र से जुड़कर कार्य कर रही है उन्होने कहा कि इस कार्य मे हम पूर्णतः सफल होगे। उन्होने कहा कि नगरीय क्षेत्रो के सभी वार्ड के प्रत्येक घरो मे डेगू के लार्वा की पहचान और वैक्सीन से छूटे हुये लोगो को चिन्हित करने का काम जारी है।अभियान के सुभारंभ मे प्रमुख रूप से कार्यपालन यंत्री व्हीपी उपाध्याय, सहायक यंत्री आरपी शर्मा, प्रभारी अधिकारी मोरवा जोन सलील सिंह,आईईसी प्रबंधक आशीष शुक्ला, प्रोजेक्ट मैनेजर सीडाटेल रावेन्द सिंह सहित नगर निगम के अधिकारी कर्मचारियो की उपस्थिति रही।

ग्राम प्रधानों का एक दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

समय पर ग्राम प्रधानों को सूचना नही मिलने पर प्रधान संघ अध्यक्ष राहुल शुक्ल ने जताया विरोध

अवध की आवाज ब्यूरो

खोड़ारे गोण्डा। बुधवार को ब्लॉक बभनजोत मुख्यालय गौराचौकी पर नवनिर्वाचित ग्राम प्रधानों का एक दिवसीय प्रशिक्षण हुआ गौरा विधायक प्रभात वर्मा के प्रतिनिधि पंकज पटेल ने व प्रधान संघ अध्यक्ष राहुल शुक्ल ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया, इस अवसर पर खंड विकास अधिकारी डॉ कमलेश कुमार कबीर ने ग्राम प्रधानों को उनके अधिकारों के बारे में जानकारी दी, इस अवसर पर पंकज पटेल ने कहा कि अगर प्रधान चाहें तो अपने गांव का विकास बहुत अच्छे तरीके से कर सकते हैं, प्रधान संघ अध्यक्ष राहुल शुक्ल ने ग्राम प्रधानों से कहा कि प्रधान गण बिना किसी भेदभाव के गांव का विकास करें, इस अवसर पर ट्रेनर मनोज कुमार मिश्रा, फरीद खान, महेश कुमार,, सतीश श्रीवास्तव ने ग्राम प्रधानों को गांव का विकास कैसे हो इस विषय में जानकारी दी, इस अवसर पर एडीओ पंचायत संजय जायसवाल, प्रधान डॉ अब्दुल सलाम, बनारसी गुप्ता, सियाराम जायसवाल, जमाल अहमद, इबरार अली, मनीष पांडेय,दिनेश वर्मा सहित अधिकांश प्रधान मौजूद रहे।

स्वजातीय टीमों का कार्यक्रम एक सप्ताह के अंदर कार्यालय में जमा करें–जिलाध्यक्ष

अवध की आवाज

उरई (जालौन) समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष नवाब सिंह यादव ने जिले के समस्त विधानसभा, ब्लाक और नगर अध्यक्षों तथा विधानसभा के टिकिट के उम्मीदवारों के नाम एक परिपत्र जारी करते हुए कहा कि चुनावी माहौल तैयार करने के लिए स्वजातीय पार्टी कार्यकर्ताओं की टीमें सभी विधानसभा क्षेत्रों में गांव गांव भ्रमण कर रही है लेकिन किसी ने कार्यक्रम की सूची नहीं दी है कि कौन सी टीम किस क्षेत्र में किन किन तिथियों में जायेगी। उन्होंने स्वजातीय टीमों के प्रमुखो से अपील की है कि वे अपना कार्यक्रम एक सप्ताह के अंदर कार्यालय में जमा करें जिससे सभी उम्मीदवारों और विधानसभा, ब्लाक, नगर अध्यक्षो को भी जानकारी हो सके। उन्होंने कहा कि समस्त टीम प्रमुख अलग अलग ब्लाकों, गांवों और शहरों में जाये और चुनावी माहौल बनाये और स्वजातीय बंधुओं को समझाकर समाजवादी पार्टी में जोड़ने का काम करें।

हिंदी दिवस की मधुर बेला पर मंगलवार की शाम स्वामी विवेकानंद इंटर कॉलेज मैं काव्य संध्या का हुआ आयोजन

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोंडा। हिंदी दिवस की मधुर बेला पर मंगलवार की शाम स्वामी विवेकानंद इंटर कॉलेज मनकापुर में काव्य संध्या का आयोजन वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रसिद्ध कवि डॉक्टर सतीश आर्य की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कविधिक्षक ईश्वर चंद्र मेंहदावली ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुजरात से पधारे प्रसिद्ध कवि सुधांशु भूषण वर्मा ने सर्वप्रथम मां सरस्वती के चित्र पर फूल माला अर्पण कर व दीप प्रज्वलित कर मां सरस्वती की वंदना करते हुए काव्य पाठ का शुभारंभ किया । उन्होंने हिंदी को प्रणाम करते हुए अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करते हुए पढ़ा कि– हवा बही है बादल छाया, झड़ी लगी है हिंदी की । काले अंग्रेजों ने भैया किस्मत फोड़ी हिंदी की । प्राचार्य व कवि पंडित राम हौसला शर्मा ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बताते हुए पढ़ा – हिंदी हमारे देश की भाषा महान है । हिंदी हमारी हिंदी हम सबकी जान है । कवि आर के नारद ने हिंदी की महिमा गाते हुए पढ़ा– सातों स्वरों में हिंदी सजधज के संवरती। ढोलक तथा तबले पर हिंदी है थिरकती। कवि एंव मीडिया प्रभारी राम लखन वर्मा ने हिंदी की रचना कुछ इस प्रकार पढ़ी– हिंदी भाषा सीखिए, बढ़ा लीजिए ज्ञान। हिंदी से ही हो रही, भारत की पहचान।। कवि व शिक्षक ईश्वरचंद मेंहदावली ने देशवासियों से हिंदी को आगे लाने के लिए पढ़ा– हिंदी से ही देश को सजाना चाहिए। सबमें हिंदी प्रेम को जगाना चाहिए।। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ साहित्यकार एंव प्रसिद्ध कवि डॉ सतीश आर्य ने पढ़ा– श्रेणुकाश की छवि में छिटकी, रसवंती में

मानो भिगोई हुई। अज्ञेय की नूतन व्यंजना में, मधु शब्द की सैया पर सोई हुई है। नागा गजानन नागर के मृदु, प्राणों में जैसे पिरोई हुई है। धूमिल के हर आखर में लगती, मानो दूध की धोई हुई है। इसके अलावा कवि डॉ धीरज श्रीवास्तव, कवियत्री इशरत सुल्ताना, कवि चंद्रगत भारती, उमा शंकर दुबे, उमाकांत कुशवाहा, राजेश मिश्रा, कवि व एडवोकेट केदारनाथ मिश्रा आदि ने भी हिंदी को समर्पित रचनाएं पढ़ी। कार्यक्रम के अंत में विवेकानंद इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य सर्वेश भट्ट ने आए हुए सभी लोगों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

किम कार्दशियन को देख लोगों को आई रणवीर सिंह की याद, मीम्स वायरल

मुंबई, (वेब वार्ता)। एक तरफ विदेश में मेट गाला 2021 इवेंट चल रहा था और दूसरी ओर सोशल मीडिया पर रणवीर सिंह अचानक ही ट्रेंड करने लगे। सोशल मीडिया पर उनके मीम्स वायरल होने लगे,

जिन्हें देख हर कोई हैरान था। रणवीर सिंह अपने अतरंगी और अजीबोगरीब कपड़ों के लिए खूब चर्चा बटोरते हैं और इस बार मेट गाला इवेंट में भी सिलेब्रिटीज बड़े ही अतरंगी कपड़ों में नजर आए। किम कार्दशियन तो पूरी तरह ब्लैक कपड़ों में ढकी नजर आईं। लेकिन किम कार्दशियन और अन्य सिलेब्रिटीज के बीच पूरी लाइमलाइट रणवीर सिंह बटोर ले गए। दरअसल यूजर्स का मानना था कि रणवीर सिंह के बिना मेट गाला इवेंट पूरा नहीं हो सकता। उनका मानना था कि फैशन के मामले में रणवीर सिंह को कोई टक्कर नहीं दे सकता। वह कुछ भी क्यों न पहन लें, सब में फबते हैं और बाकी सब उनके आगे पानी भरते हैं। इसीलिए उन्होंने रणवीर सिंह के मीम्स और अतरंगी कपड़ों वाली तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल करनी शुरू कर दीं।

कंगना रनौत फिल्म द इनकारनेशन-सीता में मुख्य भूमिका निभाएंगी

मुंबई, (वेब वार्ता)। अभिनेत्री कंगना रनौत ने बुधवार सुबह घोषणा की कि वह आगामी पौराणिक फिल्म द इनकारनेशन–सीता में देवी सीता की भूमिका निभाती नजर आएंगी। यह घोषणा उन्होंने इंस्टाग्राम पर की गई। उन्होंने फिल्म का एक पोस्टर भी साझा किया है। कंगना ने लिखा, यह रहा अपडेटेड पोस्टर हैशटैग द इनकारनेशन–सीता, हैशटैग कंगना रनौत, हैशटैग मनोज मुंतशिर, हैशटैग एसएस स्टूडियो। फिल्म अलौकिक देसाई द्वारा निर्देशित की जाएगी और कथित तौर पर पांच भाषाओं – हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ में रिलीज होगी। अभिनेत्री ने अपने स्कूल के दिनों की एक पुरानी तस्वीर भी साझा की, जिससे पता चलता है कि यह पहली बार नहीं है जब वह पौराणिक चरित्र निभाएंगी। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर साझा किया, मैं जब 12 साल की थी तो एक बच्चे के रूप में सीता का किरदार निभाया था कृ सियारामचंद्र की जय।

शुरुआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया दो पैसे चढ़ा

मुंबई, (वेब वार्ता)। भारतीय रुपया बुधवार को शुरुआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले दो पैसे की तेजी के साथ 73.66 पर खुला। अमेरिका में मुद्रास्फीति के आंकड़े जारी होने से पहले डॉलर में तेजी देखी गई, जिसके चलते घरेलू मुद्रा एक सीमित दायरे में कारोबार कर रही थी। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि इसके अलावा कच्चे तेल की कीमतों में तेजी ने भी रुपये की बढ़त को सीमित किया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया डॉलर के मुकाबले 73.68 पर खुला और फिर अपने पिछले बंद भाव के मुकाबले दो पैसे बढ़कर 73.66 पर पहुंच गया। शुरुआती कारोबार के दौरान रुपये ने 73.71 के निचले स्तर को छुआ। रुपया मंगलवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 73.68 पर बंद हुआ था। इसबीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.01 प्रतिशत बढ़कर 92.63 पर आ गया। वैश्विक तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड वायदा 0.63 प्रतिशत बढ़कर 74.06 डॉलर प्रति बैरल के भाव पर था।

प्रधानमंत्री ने इंजीनियर्स दिवस पर दी बधाई

नई दिल्ली, (वेब वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को इंजीनियर्स दिवस (अभियंता दिवस) पर सभी अभियंताओं को बधाई दी और कहा कि धरती को बेहतर बनाने और प्रौद्योगिकी के मामले में देश को आधुनिक बनाने में उनके योगदान का धन्यवाद करने के लिए शब्द नहीं हैं। भारत के महान अभियन्ता एवं देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से विभूषित सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या के जन्मदिवस पर देश हर साल इंजीनियर्स दिवस (अभियंता दिवस) मनाता है। प्रधानमंत्री ने एक ट्वीट में कहा, ''इंजीनियर्स दिवस पर सभी परिश्रमी इंजीनियरों को बधाई। हमारे ग्रह को बेहतर और तकनीकी रूप से उन्नत बनाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए उन्हें धन्यवाद देने के लिए कोई शब्द पर्याप्त नहीं हैं। मैं एम. विश्वेश्वरय्या को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनकी उपलब्धियों को याद करता हूं।'' वर्ष 1860 में जन्मे इस महान अभियंता ने बेहद कम संसाधनों के बावजूद दक्षिण

भारत में बांध निर्माण से लेकर सिंचाई तथा जलापूर्ति के क्षेत्र में बड़े–बड़े काम किए। विश्वेश्वरैया ने मैसूर के कृष्ण राजसागर बांध का निर्माण कराया, जिससे मैसूर और मंड्या जिलों का काया पलट हो गया। वाड्यार वंश के शासनकाल में कावेरी नदी पर इस बांध के निर्माण के दौरान देश में सीमेंट नहीं बनता था। इसके लिए इंजीनियरों ने मोर्टार तैयार किया जो सीमेंट से ज्यादा मजबूत था। इस बांध का निर्माण सर एमवी के नाम से प्रसिद्ध विश्वेश्वरैया के जीवन की बड़ी उपलब्धियों में से एक है। विश्वेश्वरैया को 1912 में मैसूर के महाराजा ने अपना दीवान यानी मुख्यमंत्री नियुक्त किया। उनका निधन 1962 में हुआ।

संजय मिश्रा, रणवीर शौरी अभिनीत हसल हमारे अंदर का अंधेरा खोजती है

मुंबई, (वेब वार्ता)। निर्देशक रवि सिंह का कहना है कि उनकी फिल्म हसल हर व्यक्ति के अंदर मौजूद अंधेरे को खोजती है। फिल्म के बारे में रवि सिंह ने खुलासा किया, यह जीवन की कहानी है, हर इंसान में व्याप्त अंधेरे की कहानी है, कुछ में इसके साथ बढ़ने का साहस है, कुछ में खुद के अस्पष्ट हिस्सों को खोजने का साहस है, कुछ अलग दिखने

और चांद की तरह चमकने की जद्दोजहद करते हैं, कुछ में बदले की आग होती है। यह चार जीवन और उनके जीने के संघर्ष की ऊधाम की कहानी है। यह फिल्म उस मौलिक अंधेरे को दिखाती है जिसे हर कोई छुपाता है, जबकि वह हर व्यक्ति के भीतर होता है। यह दर्शाता है कि कैसे फिल्म के सभी चार पात्र अपने संघर्षों का आनंद लेते हैं, स्वीकार करते हैं और इसका जश्न मनाते हैं और इसके साथ बेहतर तरीके से जीने की कोशिश करते हैं। इस फिल्म की पटकथा लिखने के विचार के बारे में रवि कहते हैं, फिल्म में 4 कहानियां हैं और मुझे अपने परिवेश से अवलोकन के माध्यम से प्रेरणा मिली है। इसलिए ये काल्पनिक पात्र नहीं हैं और वास्तविक जीवन से अनुकूलित हैं। मैंने उन्हें सिर्फ शब्द दिए हैं। यह एक ऐसी कहानी है, जो हर परिवार, शहर, गांव आदि में बसती है। यह हम जैसे आम लोगों की कहानी है। संजय मिश्रा, रणवीर शौरी, राघव जुयाल और तेजस्वी सिंह अहलावत अभिनीत हसल रवि सिंह द्वारा लिखित, निर्देशित और जयेश पटेल द्वारा निर्मित है। ब्रावो एंटरटेनमेंट द्वारा प्रस्तुत यह फिल्म दिसंबर में फ्लोर पर जाएगी। पहला शूट शेड्यूल वाराणसी में होगा। इसमें इश्तियाक खान भी अहम भूमिका में हैं। निर्माता जयेश पटेल को वास्तव में कहानी का सेटअप पसंद आया। उन्होंने कहा, लेखक–निर्देशक रवि ने मुझे इस साल जनवरी में यह कहानी सुनाई। मुझे वास्तव में शैली और कहानी का सेटअप और उपचार पसंद आया। फिर, कलाकारों के अनुकूल भूमिका के लिए सहमत हुए, हम बस आगे बढ़ गए। प्री–प्रोडक्शन पूरा हो गया है। अभिनेताओं के साथ कार्यशाला पूरे नवंबर के लिए निर्धारित की गई है। हम वाराणसी में दिसंबर के पहले सप्ताह में शूटिंग शुरू करेंगे।

ऋत्विक साहोरे ने काम से ली छुट्टी, परिवार संग बिताया जन्मदिन

मुंबई, (वेब वार्ता)। टेलीविजन धारावाहिक इंदौरी इश्क का हिस्सा बनने के बाद से अभिनेता ऋत्विक साहोरे एक घरेलू नाम बन गए हैं। लंबे शेड्यूल में बैक–टू–बैक काम करने के बाद उन्होंने मंगलवार को काम से छुट्टी लेने और अपने परिवार के साथ जन्मदिन मनाने का फैसला किया। 22 वर्षीय अभिनेता परिवार और करीबी दोस्तों के साथ दिन बिताएंगे। महीनों के बाद एक दिन की छुट्टी लेने के बारे में बात करते हुए, ऋत्विक ने बताया, मैंने अपने परिवार के साथ लंबे समय तक क्वालिटी टाइम नहीं बिताया है, इसलिए इस दिन मैं उनके साथ दिन बिताऊंगा और अपने दोस्तों के साथ मिलूंगा। अपने परिवार और दोस्तों के आसपास रहने से ज्यादा खुशी मिलती है, इसलिए यह जन्मदिन उनके साथ रहेगा। ऋत्विक जल्द ही एस्केप लाइव्स और कॉलेज डायरीज नाम के एक आगामी शो में नजर आएंगे।

पाकिस्तान की तालिबान को मजबूत करने में भूमिका, कट्टरपंथियों की जीतः अमेरिकी सांसद

वाशिंगटन, (वेब वार्ता)। अमेरिका के एक शीर्ष सांसद ने कहा कि पाकिस्तान की तालिबान को मजबूत करने में भूमिका, पाकिस्तान सरकार में शामिल कट्टरपंथियों की जीत है। सांसद ने यह भी कहा कि अफगानिस्तान में जो हालात पैदा हो रहे हैं और पाकिस्तान वहां जो भूमिका निभा रहा है, वह भारत के लिए अच्छा संदेश नहीं है। रिपब्लिकन पार्टी से सांसद मार्को रुबियो ने अफगानिस्तान पर कांग्रेस की सुनवाई के दौरान कहा कि अमेरिका के कई प्रशासन तालिबान को फिर से संगठित होने में पाकिस्तान की भूमिका को अनदेखा करने के दोषी हैं। वहीं अन्य अमेरिकी सांसदों ने पाकिस्तान के ''दोहरे व्यवहार'' पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा,'' भारतकृकृमुझे मालुम है कि आज एक घोषणा वहां हुई है कि क्वाड की एक बैठक अति शीघ्र होगी, जो कि एक अच्छा कदम हैकृकृ।'' सांसद ने विदेश मंत्री एंटोनी ब्लिंकन से कहा, '' मेरा मानना है कि अमेरिका के कई प्रशासन तालिबान को फिर से संगठित होने में मदद करने में पाकिस्तान की भूमिका को अनदेखा करने के दोषी हैं। पाकिस्तान की तालिबान को मजबूत करने में भूमिका, पाकिस्तान सरकार में शामिल तालिबान समर्थक कट्टरपंथियों की जीत है। वहीं, सांसद माइक राउंड्स ने कहा कि पाकिस्तान तालिबान सरकार को भारत से निपटने के लिए एक साझेदार के तौर पर देख रहा है। वहीं, ईरान के राष्ट्रपति ने भी खुले आम इसे अमेरिकी सेना की हार करार दिया है और वह तालिबान के साथ मिल कर काम करने पर विचार कर रहे हैं। संसद की विदेश संबंधों की समिति के अध्यक्ष सांसद रॉबर्ट मेनेंडेज ने ''पाकिस्तान के दोहरे व्यवहार '' और '' तालिबान को सुरक्षित पनाहगाह मुहैया कराने'' के संबंध में बात की। सांसद जेम्स रिच ने ब्लिंकन से कहा कि अमेरिका को इस पूरे मामले में पाकिस्तान की भूमिका को समझना चाहिए।

एप्पल आईफोन १३ की भारत में कीमत तय, शुक्रवार से प्री-ऑर्डर शुरू

नई दिल्ली, (वेब वार्ता)। एप्पल ने आईफोन 13 लाइनअप की भारत में कीमत और उपलब्धता की जानकारी की घोषणा की है। ग्राहक आईफोन 13 प्रो को 1,19,900 रुपये में और आईफोन 13 प्रो मैक्स को 1,29,900 रुपये में एप्पल डॉट कॉम/इन/स्टोर से खरीद सकते हैं। ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, चीन, जर्मनी, भारत, जापान, यूके, यूएस और 30 से ज्यादा देशों और क्षेत्रों के उपयोगकर्ता शुक्रवार को 17 सितंबर से सुबह 5 बजे पीडीटी से आईफोन 13 प्रो और आईफोन 13 प्रो मैक्स का प्री–ऑर्डर 24 सितंबर से कर सकेंगे। आईफोन 13 प्रो और आईफोन 13 प्रो मैक्स ग्रेफाइट, गोल्ड, सिल्वर और सिएरा ब्लू रंग में उपलब्ध होंगे। एप्पल ने आईफोन 13 और आईफोन 13 मिनी की शुरूआती कीमत भी पिछले साल की तरह ही क्रमशः 79,900 रुपये और 69,900 रुपये रखी है। शुक्रवार से प्री–ऑर्डर शुरू हो जाएंगे। एप्पल आईफोन पांच रंगों गुलाबी, नीला, मिडनाईट, स्टारलाइट, और (प्रोडक्ट) लाल,

जबकि आईफोन 13 मिनी पांच रंगों में गुलाबी, नीला, मिडनाईट, स्टारलाइट, और (प्रोडक्ट) लाल में आता है। नए आईफोन 13 और आईफोन 13 मिनी में एक छोटा नॉच शामिल है जो ज्यादा डिस्प्ले ऐरिया की अनुमति देता है। यह नौच 20 प्रतिशत छोटा है और नया सुपर रेटिना एक्सडीआर डिस्प्ले 28 प्रतिशत ब्राइटर है जिसमें 1200 निट्स पीक ब्राइटनेस है। आईफोन 13 में 6.1 इंच का सुपर रेटिना एक्सडीआर डिस्प्ले है। इसके अतिरिक्त, आईफोन 13 हुड के नीचे एक नया ए15 बायोनिक चिपसेट को स्पोर्ट करता है, जिसके बारे में एप्पल का कहना है कि यह प्रमुख प्रतिद्वंद्वी चिप्स की तुलना में 50 प्रतिशत तक तेज है और 30 प्रतिशत तक बेहतर ग्राफिकल प्रदर्शन देता है।

सनसनी फैलाने के लिए सोशल मीडिया का दुरुपयोग न करें : अनिल कपूर

मुंबई, (वेब वार्ता)। बॉलीवुड स्टार अनिल कपूर अपने वर्कआउट वीडियो से लेकर पारिवारिक तस्वीरों और भतीजे अर्जुन कपूर के साथ अपनी मस्ती से लेकर सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय हैं। हालांकि, अभिनेता–फिल्म निर्माता अरबाज खान के साथ चौट शो पिंच सीजन 2 पर बातचीत के दौरान अभिनेता ने सावधानी बरती। यह पूछे जाने पर कि वह सोशल मीडिया की शक्ति को कैसे देखते हैं और उनके पास अपने प्रशंसकों के लिए कोई सलाह है, तो मिस्टर इंडिया ने कहा, मेरी सलाह है, ट्रिगर–खुश न हों, सोशल मीडिया का सकारात्मक उपयोग करें जैसा कि हो सकता है। प्यार और सकारात्मक संदेश फैलाने के लिए एक महान मंच। इसे नकारात्मक रूप से इस्तेमाल करने की कोशिश न करें और सनसनी फैलाने के लिए इसका दुरुपयोग न करें। कपूर ने आगे कहा, जब आपको किसी मामले के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, तो आप उस पर टिप्पणी क्यों करते हैं? चुप रहना और अपने काम पर ध्यान देना बेहतर है।

लगातार 10 दिनों से पेट्रोल, डीजल की कीमतें स्थिर

नई दिल्ली, (वेब वार्ता)। देश में ऑटो ईंधन की कीमतों में स्थिरता बनी हुई है। तेल विपणन कंपनियों (ओएमसी) ने बुधवार को ऑटो ईंधन, पेट्रोल और डीजल की पंप कीमतों को लगातार दसवें दिन भी अपरिवर्तित रखा। देश के सबसे बड़े ईंधन रिटेलर इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के अनुसार, पेट्रोल और डीजल की कीमत दिल्ली में 101.19 रुपये और 88.62 रुपये प्रति लीटर पर अपरिवर्तित बनी हुई है। मुंबई में बुधवार को पेट्रोल की कीमत 107.26 रुपये प्रति लीटर पर स्थिर रहीं, जबकि डीजल की दरें भी 96.19 रुपये प्रति लीटर पर अपरिवर्तित रहीं। देश भर में भी पेट्रोल और डीजल की कीमतें बुधवार को स्थिर रहीं, लेकिन उनकी खुदरा दरें राज्य में स्थानीय करों के स्तर के आधार पर अलग थीं। तेल कंपनियों द्वारा अपनाए गए मूल्य निर्धारण फार्मूले के तहत, दैनिक आधार पर पेट्रोल और डीजल की दरों की समीक्षा और बदलाव किया जाता है। नई कीमतें सुबह छह बजे से प्रभावी हो गई हैं। कीमतों की

दैनिक समीक्षा और बदलाव पिछले 15 दिनों में अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बेंचमार्क ईंधन की औसत कीमत और विदेशी विनिमय दरों पर आधारित है। कुछ हफ्ते पहले 74 डॉलर प्रति बैरल के निशान को छूने और फिर कम होने के बाद बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड फिर से करीब 74 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कफील खान के दूसरे निलंबन पर लगाई रोक

प्रयागराज, (वेब वार्ता)। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने जुलाई 2019 के यूपी सरकार के उस आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें बाल रोग विशेषज्ञ कफील अहमद खान को इस आरोप में निलंबित कर दिया गया था कि उन्होंने बहराइच जिला अस्पताल में मरीजों का जबरन इलाज किया था और सरकार की नीतियों की आलोचना की थी। यह दूसरी बार है जब खान को राज्य सरकार ने निलंबित किया था। गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कॉलेज में अगस्त 2017 में हुई त्रासदी के बाद वह पहले से ही निलंबित थे, जहां ऑक्सीजन की आपूर्ति में कथित व्यवधान के कारण 60 बच्चों की मौत हो गई थी। खान द्वारा दायर एक रिट याचिका पर सुनवाई करते हुए, न्यायमूर्ति सरल श्रीवास्तव ने याचिकाकर्ता के खिलाफ एक महीने की अवधि के भीतर जांच समाप्त करने का निर्देश दिया है। अदालत ने आगे निर्देश दिया कि याचिकाकर्ता जांच में सहयोग करेगा और अगर याचिकाकर्ता सहयोग नहीं करता है, तो अनुशासनात्मक प्राधिकारी जांच को एकतरफा समाप्त करने के लिए आगे बढ़ सकते हैं। इस मामले को 11 नवंबर, 2021 को सूचीबद्ध करने का निर्देश देते हुए, अदालत ने कहा कि जब मामले को अगली बार सूचीबद्ध किया जाएगा, तो प्रतिवादी अदालत को जांच के परिणाम के बारे में सूचित करेंगे। इसके अलावा, अदालत ने राज्य के अधिकारियों को जवाब दाखिल करने के लिए चार सप्ताह का समय दिया है। खान, अगस्त 2017 में अपने निलंबन के दौरान, लखनऊ के महानिदेशक चिकित्सा शिक्षा (डीजीएमई) कार्यालय से जुड़े थे। इस अवधि के दौरान, उन्होंने बहराइच अस्पताल का दौरा किया और दावा किया कि उन्हें जापानी इंसेफेलाइटिस से प्रभावित बच्चों के इलाज के लिए जनता द्वारा बुलाया गया था।

अवध की आवाज ब्यूरो

उन्नाव। उन्नाव,बीघापुर थाना क्षेत्र के रामपुर निवासी शेखू अनवर को रोडवेज बस ने सर सैयद स्कूल के सामने मारी टक्कर युवक शेख अनवर की घटनास्थल पर ही हुई मौत जानकारी के अनुसार युवक सदर कोतवाली क्षेत्र में लाइट वायरिंग का काम करता है सदर कोतवाली क्षेत्र की है घटना।

विरोध प्रदर्शन के बाद तालाब बन चुकी सड़क पर पत्थर डालने का काम हुआ शुरू

सड़को पर मरम्मत कार्य को दिखाते किसान नेता

अवध की आवाज ब्यूरो

पिहानी/हरदोई। पिहानी से जहानीखेड़ा जाने का जर्जर मार्ग पर भारतीय किसान यूनियन के द्वारा ग्राम जाजू पारा के पास तालाब में तब्दील हो चुकी सड़क में मछली पालन करते हुए मछली पकड़ते हुए किसानों का भारतीय किसान युनियन अवध संगठन के नेताओं ने किया था प्रदर्शन जिसके बाद उपजिलाधिकारी शाहाबाद ने लिया संज्ञान। तालाब में तब्दील हो चुकी सड़क पर पत्थर डलवा कर सड़क पर चलने योग्य बनवाया। इसके बाद पहुंचे किसान नेता राहुल मिश्रा ने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों से बात करते हुए कहा यदि समय रहते इस सड़क को गड्ढा मुक्त नहीं किया गया तो इस पर किसान धरना प्रदर्शन करेंगे इस मौके पर तंजीम खान कयूम खान रफी अहमद आफाक रजी अहमद शमशेर रामबहादुर गजेंद्र आज दर्जनों किसान मौजूद रहे।

अवध की आवाज हिन्दी दैनिक, प्रकाशक ,मुद्रक व स्वामी,अनिल कुमार सिंह द्वारा स्काई लाइन प्रिन्टर्स,119/23 खन्दारी लेन, लालबाग, लखनऊ उ0प्र0 से मुद्रित तथा डी–97/3 व 7,सेक्टर–7, इन्दिरा नगर,लखनऊ,उ0प्र0 से प्रकाशित। सम्पादक अनिल कुमार सिंह फोन : 0522–4340954 मो0–7905407289, Email: avadhkiaawaz@gmail.com

R.N.I.- UPHIN/2012/45127

नोट : समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादोंका न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।